सम्पादक—— प्रो० रामाश्रय मिश्र

सह सम्पादक——डॉ० कान्तिकृष्ण, प्रो० भारतभूषण, डॉ० अमरनाथ द्विवेदी, प्रो० वेद प्रकाश,
पं० महावीर 'वीर' ।

छात्र सम्पादक——ब्र० बलवीरसिंह ब्र० सत्यवीरसिंह

आर्यभट्ट परिवार के सदस्यों के नाम संदेश

आर्यभट्ट परिवार के सदस्यों के प्रति मैं शुभकामनायें प्रस्तुत करता हूँ। जिस तरह से नवयुवक वैज्ञानिकों ने आर्य भट्ट को अन्तरिक्ष में स्थापित कर भारत को गौरवान्वित किया उसी तरह मैं आशा करता हूँ कि गुरुकुल के गुरुजन, शिष्यगण एवं कर्मचारीगण मिलकर गुरुकुल को भी ऊंचा उठाने का प्रयत्न करेंगे, ताकि गुरुकुल भी शिक्षा गगन में चमकदार सितारे की तरह चमके और अपनी पुरानी गरिमा को पुन: प्राप्त करे।

आइये, इस शुभ मास में हम यह व्रत धारण करें।

बलभद्र कुमार

आर्य भट्ट परिवार

विश्वविद्यालय-प्राध्यापक

१. डा० अभेदानन्द
२. प्रो चन्द्रशेखर त्रिवेदी

शिक्षकेतर

३. श्री कुंवरसिंह
४. श्री सरदारसिंह

विश्वविद्यालय-छात्र

५. कृष्ण कुमार अंगिरा
६. गुरुदेव भारद्वाज
७. रजन कुमार जोशी
८. शमशेरसिंह
९. सत्यवान यादव
१०. सागर सिंह
११. स्वामी विवेकानन्द
१२. हरिकृष्ण मनचन्दा
१३. हेमन्त कुमार
१४. विजेन्द्र सिंह

कार्यालय

१५. श्री दौलतराम

विद्यालय भण्डार

१६. श्री जीतराम

विद्यालय माध्यमिक अध्यापक

१७. श्री बलराम दत्त मिश्र–

शिक्षकेतर

१८. श्री कालीचरण

विद्यालय ब्रह्मचारी

१९. ब्र० अशोक कुमार
२०. ,, अशोक कुमार 'मंगल'
२१. ,, अश्विनीकुमार
२२. ,, टीकादत्त
२३. ,, दिनेश कुमार
२४. ,, पुरुषोत्तम
२५. ,, मनजीतसिंह
२६. ,, रवीन्द्रकुमार
२७ ,, राजेन्द्रसिंह
२८. ,, राम अवतार
२९. ,, वेदप्रकाश
३०. ,, शैलेन्द्रनाथसिंह
३१. ,, सुमेरसिंह
३२ ,, सुरेन्द्र कुमार

टिप्पणी.––जन्मतिथि को दृष्टि में रखते हुए मासानुसार समस्त गुरुकुल एवं विश्व विद्यालय के छात्रों, अध्यापकों, प्राध्यापकों, कर्मचारियों एवं अधिकारियों के निम्न परिवार बनाये गये हैं । जनवरी लाजपत, फरवरी–दयानन्द, मार्च–भगतसिंह, अप्रैल,–आर्य भट्ट, मई–रवीन्द्र, जून– अनामिका, जुलाई–तिलक, अगस्त–अरविन्द, सितम्बर–विनोबा, अक्टूबर–गाँधी, नवम्बर–नेहरू एवं दिसम्बर–श्रद्धानन्द । परिवार के सदस्यों की सूची प्रतिमास निकलेगी जिनके नाम सूची में अभी तक नहीं आयें । कृपया दे देवें ।

––सम्पादक

भारत-सोवियत मैत्री : आर्यभट

परिवर्तिनि ससारे मृत को वा न जायते ।
सजातो येन जातेन याति वंश समुन्नतिम् ।।
नीतिशतकम्—भर्तृहरि ।

परिवर्तनशील संसार में कौन व्यक्ति मर कर जन्म नही लेता है अथवा कौन ऐसा है जो मरता नहीं है और जन्म नही लेता है अर्थात् मरना-जीना तो साथ लगा रहता है किन्तु जिसके उत्पन्न होने से वंश उन्नति को प्राप्त होता है वही सच्चे अर्थों में उत्पन्न हुआ है अर्थात् उसी का जन्म सफल है।

भर्तृहरि जी ने ठीक ही कहा किन्तु मैं इसमे संशोधन करना चाहूंगा कि उसका जन्म लेना सफल है जिसके उत्पन्न होने से न केवल वंश अपितु राष्ट्र एव विश्व उन्नति को प्राप्त होता है। ऐसे व्यक्तियों को ही महापुरुष कहा जाता है जिनके जन्म दिन ही नही जन्म शताब्दियां मनायी जाती है। ऐसे ही एक महापुरुष का जन्म आज से १५०० वर्ष पूर्व पाटलिपुत्र, आज कल पटना के नाम से ज्ञात के गंगा तटवर्ती ग्राम कुसुमपुर मे हुआ था। वह महापुरुष आर्यभट्ट था। जिसने २३ वर्ष की आयु में विज्ञान में अपूर्व सफलता प्राप्त की। उन्होंने गणितीय बिधि से इस तथ्य को प्रमाणित कर दिया कि पृथ्वी सूर्य के चतुर्दिक घूमती है और बीजगणित एवं त्रिकोणमीति सम्बन्धी उनकी कृतियां गौरव ग्रन्थ बन गई हैं। आर्यभट्ट ने भारतीय विचारधारा के साथ-साथ यूनानी ज्योतिषविदों के विचारों को संस्कृत भाषा में लिपिबद्ध किया था। जिसकी महत्ता को देखते हुए हमारी प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने इस पर विशेष बल दिया कि उपग्रह का नाम आर्यभट के आधार पर आर्यभट ही रखा जाय।

१९ अप्रैल, १९७५ को उपग्रह आर्यभट का प्रक्षेपण पूर्ण सफल हुआ। यह सफलता भारत सोवियत मैत्री का ही फल है। जिस पर न केवल उक्त दो राष्ट्र ही प्रसन्न है अपितु विश्व आनन्दित हो उठा है। हम स्थल पर ही नही अपितु वायु-मण्डल एवं अन्तरिक्ष मे भी इस मैत्री का प्रतिपादन कर रहे है। कवि के शब्दों मे—

सन् १९७० में स्वर्गीय डॉ० विक्रम साराभाई ने प्रो० यू० आर० राव की अध्यक्षता में त्रिवेन्द्रम् में अन्तरिक्ष केन्द्र के अग के रूप में उपग्रह प्रणाली प्रभाग की स्थापना की थी। १० मई १९७२ को भारतीय अन्तरिक्ष अनुसधान सगठन और सोवियत अकादमी ऑफ साइंसेस के बीच आर्यभट के प्रक्षेपण के समझौते पर हस्ताक्षर हुए और इसी वर्ष उपग्रह निर्माण का कार्य बंगलौर में प्रारम्भ हुआ। मूर्धन्य वैज्ञानिक प्रो० सतीश धवन एवं बी० एन० पेत्रोव तथा श्री हरिकोटा एवं कास्मोड्रोम नामक स्थानो को आज विश्व का कौन सा व्यक्ति नही जानता।

आर्यभट परियोजना के मुख्य उद्देश्य पर विचार करते हुए हमारे सम्मुख इसकी आधार शिला के रूप में निम्न महत्त्वाकांक्षाएं दृष्टिगोचर होती है—

(१) उपग्रह का डिजाइन, उसका निर्माण तथा उस पर आवश्यक वातावरणीय परिक्षण पूर्णतः भारतीय प्रयासों से किए जाये।

(२) अन्तरिक्ष में अपनी कक्षा में अपने अक्ष पर परिभ्रमण कर रहें उपग्रह की पूर्ण रूपेण जटिल जांच-पड़ताल विधि, क्रमबद्ध तरीके भारतीय वैज्ञानिकों एवं इञ्जीनियरों द्वारा विकसित किये जाये।

(३) उपग्रह से रेडियो सम्पर्क द्वारा आदान-प्रदान हेतु आवश्यक ग्राउण्ड स्टेशनों का निर्माण देश के भावी कार्यक्रमो को ध्यान में रखते हुए अत्यन्त सतर्कता से भारतीय विशेषज्ञों द्वारा किये जाये।

(४) देश की विभिन्न समस्याओं को ध्यान में रखते हुए उपग्रहों के निर्माण हेतु उपयुक्त गुण-तकनीकी आधारों का क्रमशः विकास किया जाये।

(५) उपग्रह निर्माण के प्रथम प्रयास में भारतीय वैज्ञानिकों को अन्तरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में अनुसन्धान करने का अवसर प्रदान किया जाये।

उपर्युक्त उद्देश्यों को पूर्णरूप से कार्यान्वित किया गया। जिसके परिणामस्वरूप आर्यभट उपग्रह जो ६ मास के लिए प्रक्षेपित किया गया था वह १ वर्ष पूरा करके अब भी पूर्ण सफलता से गतिमान भारतीय वैज्ञानिकों की कार्य पटुता पर सोवियत संघ की विज्ञान अकादमी की अन्तर्ब्रह्माण्डीय परिषद के अध्यक्ष अकादमीशियन बी० एन० पैत्रोव का कथन द्रष्टव्य है "भारतीय विशेषज्ञों ने अत्यन्त संक्षिप्त अवधि में विज्ञान मे भारी प्रगति की है। अपने सोवियत सहकर्मियों के सहयोग से उन्होंने उपग्रह सम्बन्धी प्रविधि में और उसके साथ ही वैज्ञानिक तथा भूमि आधारित इन्स्ट्रूमेण्टेशन के विकास मे अमूल्य अनुभव हासिल किया है भारतीय वैज्ञानिकों ने विस्तृत अन्तरिक्ष अनुसंधान कार्यक्रम तैयार किया है। उन्होंने उपग्रह के द्वारा सूर्य, आयन मण्डल तथा एक्सकिरण विकिरण की खोज बीन करने के लिए प्रयोग करने की जो योजना तैयार की है, वे समकालिक विज्ञान की विद्यमान समस्याए है।"

उपग्रह के निर्माण के दौरान कर्मियों को तैयार करने और प्रशिक्षित करने पर अत्यधिक ध्यान दिया गया। नौजवान विशेषज्ञ बहुत उत्साह और रुचि के साथ काम करते थे और विशिष्ट बात यह है कि भारतीय सहकर्मी अन्तरिक्ष अनुसन्धान के प्रति व्यापक दृष्टिकोण अपनाते है। मनोवैज्ञानिकों, शिक्षाविदों और फिल्म तैयार करने वालों को मदद हासिल की है। २० वी सदी मे अन्तरिक्ष प्रविधि के मामले में यही तरीका अपनाया जाना चाहिए। इसने विज्ञान और उद्योग की कई शाखाओं को रूपान्तरित कर दिया है।

भारत के प्रथम उपग्रह पर सैकड़ों लोगों ने काम किया है और अब यह सोवियत संघ और भारत दोनों महान् राष्ट्रों के बीच मित्रता और सहयोग का प्रतीक बन गया है। आर्यभट वह ब्रह्माण्डीय सेतु है जो भारत सोवियन संघ के विज्ञान, शोधकर्मियों और विशेषज्ञों को संयुक्त करता है।

—सम्पादक रामाश्रय मिश्र,



श्री पृथ्वीसिंह आजाद कुलाधिपति, राज्यपाल डॉ० चेन्नारेड्डी से 'वैदिक-पथ' का विमोचन करवाते हुये
बीच में श्री बलभद्रकुमार जी कुलपति प्रसन्न मुद्रा में

ओ३म्

गुरुकुल-पत्रिका

[गुरुकुल कांगड़ीविश्वविद्यालयस्य मासिक पत्रिका]

वैशाख : २०३२, अप्रैल १९७६, वर्षम्-२९, अङ्कः ६, पूर्णाङ्कः ३२७

श्रुति सुधा

ऋ० ९ मं०, ११३ सूक्त.

पवमान सोम

पवमान पवित्र हुआ सोम रस–(भौतिक क्षेत्र)

उपासक के हृदय मे पवमान–शान्त प्रवाह रूप में सोमरूप परमात्मा (आध्यात्मिक क्षेत्र)

यत्र ब्रह्मा: पवमान छन्दस्यां वाचं वदन् ।
ग्राव्णा सोमे महीयते सोमेनानन्दं जनयन्निन्द्रायेन्द्रो परि स्रव .... ॥६॥

(पवमान) मेरे अन्दर प्रवाहित होने वाले सोमरस परमात्मन् ! (यत्र) जहाँ (ग्राव्णा सोमे) स्तोता विद्वान् के द्वारा स्तुत तुझ सोम के होने पर (ब्रह्मा) वेद वेत्ता (छन्दस्यां वाचं वदन्) छन्दोमयी मधुर वाणी को बोलता हुआ और (सोमेन आनन्दजनयन) तुझ सोम से अपने अन्दर आनन्द पैदा करता हुआ (महीयते) महिमा को प्राप्त होता है ऐसी स्थिति मे चाहता हूं ।

ग्रावा--स्तोता ग्रावा गृणाते विद्वांसो वै गुणाणः । शत० ३।९।३।१४

—०:०—

जयवंशमहाकाव्ये सवाई जयसिंहः

श्री रामदत्त शर्मा

जयपुर राज्यस्य ऐतिहासिक-संस्कृत-महाकाव्य परम्परासु जयवंशमहाकाव्यस्य विशिष्टं स्थानं वर्तते । काव्येस्मिन् इक्ष्वाकुवंशजकच्छवाहा-नृपाणां आमेर शाखाया नृपाणां,तेषां कार्यकलापानां तत्कालीनसामाजिकव्यवस्थायाश्च काव्यात्मकं वर्णनं कृतम् । महाराज सोढ़देव (१०२३) आरभ्य प्रथममाधवसिंह (१८००) पर्यन्त नृपाणां राज्यकालस्य वर्णनं काव्येस्मिन् अस्ति । इदं काव्यं एकोनविंशति सर्गेषु विभक्तं । द्वितीय जयसिंह समकालीक श्रीसीतारामपर्वणीकरमहोदयेन विरचितम् । काव्यमिदं राजस्थान-विश्वविद्यालयेन १६५२ वर्षे प्रकाशितम् ।

जयवंश महाकाव्ये सवाई जयसिंहविषयिणी बहुला सामग्री प्राप्यते । सवाई जयसिंह महाराज-विष्णुसिंहस्य ज्येष्ठः सुतः मिर्जाराजाः-रामसिंहस्य प्रपौत्र रूपेण काव्येस्मिन् वर्णितः । तस्य सर्व प्रथमं वर्णनं महाकाव्यस्य दशमे सर्गे विद्यते । तत्र तस्य जन्मवर्णनं कर्तुकामः कविः लिखति–

'दिषदग्जालीजयजातकीर्तिः शिशुर्भयथावकृतजातकर्मा।
सिंहेन तुल्यो जयसिंहनाम चकार ताताेऽस्य ततोऽर्थवेदी

जयवंशम्० १०।५१

महाराज जयसिंहस्य प्रारम्भिकं जीवनं राज-गृहेषु सानन्दं व्यतीतम् । बाल्यकाले सः एकः उद्दण्डः बालकः आसीत् । तस्य अनुचितव्यवहारेण पितरौ अतीव दुःखितौ आसताम् । तस्य ईदृशीं दशां दृष्ट्वा गुरुजनाः तस्मै सद्व्यवहारस्य शिक्षां अदु । किन्तु जयसिंहस्य क्रोधो न शाम्यति अपितु वर्धते एव । तदा तस्य जननी तं ताडयति वदति च—

निवेदिता सा जननी कुमार,–
मुद्घोषयामास च ताडयन्ती ।
पित्रोर्गुरोस्ताडनमर्हमेव,
त्वं मूढधीर्दग्धमनाः शिशुत्वात् ।।

तत्रैव० १०।११८

सा रात्रौ स्वपति प्रति जयसिंहस्य चेष्टां निवेदयति । ततः नृपः गुरुणां आज्ञया जयसिंहस्य स्वस्य साम्राज्यं विजयसिंहाय च हिण्डोननगरस्य राज्यं ददाति । राज्यकार्यस्य भारेण जयसिंहस्य स्वभावे अतीव परिवर्तन बभूव एवं सः एकः प्रजापालकः धर्मपरायणः नृपः अभवत् ।

कविः जयसिंहस्य गुणानां वर्णनं इत्थं करोति

अथाधिपः प्राप्तगुणप्रकर्षः,
शशास लोकाञ्जयसिंहवर्मा ।
नित्यं श्रिया पूजितपादपद्मः,
समस्तभूपालनतो विनीतः ।।

तत्रैव० १२।१

अनेन प्रकारेण राजा सवाई जयसिंहः स्वस्य आगामिनि जीवने एकस्य कुशलस्य प्रशासकस्य रूपेण अस्माकं सम्मुखे उपस्थितः भवति । कविः कथयति यत् सः जनकल्याणार्थं एव जातः ।

सवाई जयसिंहस्य अन्येषां गुणकर्मणां विवरणं ईदृशं वर्तते–

धर्मपरायणता–सवाई जयसिंहः एकस्य धर्मतेन स्वस्य जीवनकाले धार्मिक स्थलानां परायणस्य नृपस्य रूपेण अस्माकं सम्मुखे आयाति । निर्माणं अकारि, तावन्त निर्माणं राजस्थानस्य अन्यस्य कस्यापि नृपस्यकाले न अभवत् । कल्की-गोपीनाथविश्वेश्वर सीतापतिगोविन्ददेवादि मन्दिराणि अद्यापि सवाई जयसिंहस्य गुणानां कीर्तिं उद्घोषयन्ति । धार्मिकेषु स्थलेषु स्नानं विप्राणां समादरोऽपि जयसिंहस्य धर्मपरायणताया प्रमाणं अस्ति । स० जयसिंहस्यकाले व्रजनाथ शर्मा, रत्नाकरशर्मा, सीतारामपर्वणीकरश्च अभवन् एवं

तेषां निर्देशने तेन अनेकानि धार्मिकानि कर्माणि कृतानि दानं च दत्तम्–

'तत्रतेभ्यो द्विजातिभ्यो दक्षिणां प्रददौ नृपः ।
येन दारिद्रयदारिद्रयं ब्रजे समभवत्समे ।।
तत्रैव० १३।४६

दिग्विजयकाले तेन मथुरावृन्दावनकाशीपुरीहरिद्वारपुष्करादीनां प्रधानतीर्थानां भ्रमणं कृतम् । इदं तस्य धार्मिकताया सुदृढ़ं प्रमाणं अस्ति । चतुर्दशसर्गे दिग्विजयानंतरं तेन अश्वमेधयज्ञस्यायोजनं कृतम् । यज्ञेस्मिन् तेन बहुलाभरणा रजतश्रृंगखुरमय्यी गावः बहुदक्षिणाश्च दत्ता–

'कपिलाः पयोभृतिवहाः स च गा,
बहुशोददौ द्विजनृषु प्रमची ?
बहुदक्षिणा रजतश्रृंगखुरीर्बहु-
मूल्यवस्त्रबहुलाभरणाः ।
तत्रैव० १४।५५

कुशलप्रशासकता–स० जयसिंहः न केबलं धर्मपरायणः नृपः अपितु कुशलप्रशासकोपि आसीत् तस्य राज्ये जनाः आनन्देन जीवनं यापयन्ति । जनाना भोजनस्य वस्त्राणां निवासस्य सुव्यवस्था आसीत् । जयपुरापणवर्णने कविना तत् धनधान्य पूर्णं वर्णितम् (द्रष्टव्यम्० तत्रैव० १२।७६–८२) गृहे गृहे माङ्गलिकं प्राभातिकं भवति । गावः दुग्धं ददति–

'गावः सवत्साः सितभा घटोध्न्यः,
पयोभिरानन्दित सर्वलोकाः ।
गृहे गृहे यत्र वसन्ति नित्यं–
प्राभातिकं मङ्गलमादधत्यः ।।
तत्रैव० १२।३६

जयपुरस्य नागरिकाः सवाई जयसिहस्य चित्रं स्वस्य भवनेषु स्थापयन्ति (तत्रैव०१२।४६) इदं तस्य लोकप्रियताया उदाहरण अस्ति । अतएव सः एकः सुप्रशासकः आसीत् ।

विद्यानुरागिता-कलाप्रियता–सवाई जयसिंहः कलाया ज्ञाताऽऽसीत् । स्थापत्यकलासु तस्य अत्यन्तं रूचिरासीत् । तेन कृत देवालय निर्माणं कविना मुक्तकंठं प्रशंसितम्–

'अन्योऽपि देवा बहवोऽध्युवात्सुः ।
स्यात्कस्य तेषां गणने तु शक्तिः ।।'
(तत्रैव० १२।५१)

सः चित्रकलायाः प्रिय आसीत् । तस्य समयो विदुषां मध्ये व्यतीतवान् । अतएव सः विद्यानुरागी आसीत् ।

इत्थं महाराजजयसिंहः सम्यक् रूपेण धर्मपरायणः, कुशलप्रशासकः, वीरः, विद्यानुरागी च आसीत् ।

विचारकाणां इतिहासकाराणां चेयं भणितुः यत् सः चतुर्दशविद्यानां चतुःषष्टि कलानां पारगः आसीत् जयपुर दिल्लीउज्जैनकाशीनां यंत्रशालाः साम्प्रतं अपि तस्य नृपस्य ज्योतिषशास्त्रवेत्वस्य प्रमाण अस्ति । तेन निर्मापितं जयपुरं तस्य दूरदर्शिताया प्रमाण विद्यते । एवं राजस्थानस्य इतिहासे स० जयसिहस्य विशिष्टं स्थानं विद्यते । संस्कृतसाहित्यस्य अमरकृतेः जयवंशस्य निर्माणं अस्यैव राज्ञः अनुगृहस्य परिणामः । अतः संस्कृतसाहित्यं सवाई जयसिंहस्य ऋणी वर्तते ।

अम्बरे विस्तृतमम्बरम्

डा० अमरनाथ पाण्डेय.—
काशीविद्यापीठे संस्कृतविभागाध्यक्षः

अम्बरे विस्तृतमम्बरम् ।
नग्नमङ्गं छातमङ्गं स्थण्डिले नित्यं लुठत् ।
अस्थिमात्रं विकृतवेशं कालकवलितमञ्चलम् ।
अश्रुधाराभिः परीतं शैलसागरगह्वरम् ॥१॥
अम्बरे ·· ····

सेवते हर्म्यं कुलीन क्षुत्पिपासापीडितः ।
आह्वयति करुणं सहाय शृंखलाभिः संयतः ।
किरति मोदकराशिमेकोऽमुको वाञ्छति शम्बरम् ॥२॥
अम्बरे······ ···

भ्रमति पान्थोऽतृप्तकामः सृतिं पृच्छति चञ्चलम् ।
आविलं ननु पिबत्यम्भश्चकितदृष्टिः सुस्थिरम् ।
क्वचिच्छ्रान्तो विषमभूमौ स्थितः पश्यतिडम्बरम् ॥३
अम्बरे·········

जीर्णकन्थावृतशरीरो विपणिवीथ्यां सञ्चरन् ।
प्रोल्लसत्क्षौमं च दृष्टवा भागधेयं गर्हते ।
अह क्षामो दुर्विधोऽलं प्रार्थये रे कं वरम् । ४॥
अम्बरे··········

कामिनी नन्वह दिव्या न मम शाटी शोभना ।
भूषितापीयं विरूपा किं कदाचिच्छोभते ।
विधातुर्योगो विचित्रो वदति सर्व. सत्वरम् ॥५॥
अम्बरे········



कुल-पताका आरोहण से पूर्व आगे खडे — बायीं ओर से आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति,
श्री पृथ्वीसिंह आजाद कुलाधिपति, श्री बलभद्रकुमार कुलपति, डॉ० गंगाराम गर्ग कुलसचिव,
तथा उनके पीछे खड़े हैं– श्री धर्मवीर जी सहा० मुख्याधिष्ठाता एवं
डॉ० हरगोपालसिंह उप-कुलसचिव

"परम पूज्य महात्मा हंसराजः"

रवि शास्त्री

दीनातिदीन ह्यु टजे सुजाते भृशं दिदोपे निजकर्मभिर्यः ।
अनेक जन्मार्जितपुण्यराशिः सदामरोभूतस च हंसराजः ॥१॥
त्यागेन वै वाग्मितया दृढेण, श्रमेण बुद्धयाऽत्मबलेन यस्य ।
पञ्चाम्बु रे ा समवापवृद्धि, सद्वेदवाणी बहुभिः प्रयत्नैः ॥२॥
सत्कर्मभिः संप्रति हंसराजो, विराजते भारत प्रान्तथेषु ।
बिभिन्नकेन्द्रेषु विद्वद्वरेण्यः सदामरोभाति सहंसराजः ॥३॥
विद्यालयान्यो बहुधा चकार, विद्वद्वरान्यो वहुमानदोऽभूत् ।
सद्धर्म स्वातन्त्र्य हिताय येन, प्रसारिता साङ्गलवेदवाणी ॥४॥
अज्ञान दारिद्रय जलोर्मिमग्नान् विलोक्य बालान करुणा द्रचेतः।
स्वदेश सेवोत्सक मित्रवर्यैश्चकार विद्यालय संप्रतिष्ठाम् ॥५॥
विभिन्नकेन्द्रेषु च पुस्तकालयान् संस्थापय द्वालहिताययोऽसौ ।
नृपुण्डरीकः पुरुषो महात्मा स राजहंसो विरराज भारते ॥६॥
चतुः षष्ट्यधिकेवर्षे क्रिस्तोरष्टादशेशते
अप्रेलस्योनविंशे स बजवाड पुरेऽभूत् ॥७॥
चोनोलालः पितातस्य मुल्लकराजः सहोदरः ।
शुघढदेव्याः प्रियः पुत्रष्ठाकुरदेव्याः प्रियः पतिः ।८
प्रथभ्रष्टान् हिन्दुवालान्मिशन नाङ्गल पाठालये गतान् ।
निवारयामास चाक्षेपैर्निज गौरवं शिक्षया ।९॥
मुख्याध्यापक दासेन "ईसाई" धर्मचारिणा ।
आक्षिप्तो वैदिको धर्मः हंसो नवम कक्षगः ॥१०॥
प्रत्युत्तरं ददौतस्मै तेनासौज्वलनोपमः ।
प्रत्युत्थाय स दण्डेन हंसराजमताडयत् ॥
प्रेरितोऽनुविचारेण हंससमतोषयत् ॥११॥

सर्वासु भाषासु विभाति संस्कृतम्

ले० वैद्य—रामस्वरूप शास्त्री, सम्पादकः—बाल संस्कृतम्, बम्बई ८६

न पूर्णतामेति नरस्य जीवनं
शिक्षां विना रत्नमिवाऽपरीक्षितम् ।
शिक्षाऽप्यपूर्णा पुरुषस्य तावत्
न संस्कृतं यावदुपैति मानुषः ॥१॥

सभारतीयो न च भारतीयः
यः संस्कृतं वेत्ति न शिक्षितोऽपि ।
न साक्षरः सोऽपि च साक्षरोऽस्ति
योऽधीतविद्योऽपि न वेत्ति संस्कृतम् ॥२॥

वेदाहि विज्ञानविधौ प्रसिद्धाः
अध्यात्मवादे ज्ञानं प्रसिद्ध्यति ।
ध्वनिश्च सत्काव्यगुणेषु तेषु
देहेषु चात्मा निगदेषु सस्कृतम् ॥३॥

वन्येषु सिंहः पशुषु प्रसिद्धः
शुकश्च सर्वेषु विहङ्गमेषु ।
गावश्च गृह्येषु पयः प्रदेषु
चतरसबोधं भाषासु संस्कृतम् ॥४॥

नरेषु गान्धिर्नारीषु चेन्दिरा
मुम्बापुरी पूर्षु नदीषु गङ्गा ।
हिमालयश्चोच्चशिलोच्चयेषु
द्वीपेषु जम्बू निगदेषु संस्कृतम् ॥५॥

देश कृतार्थः जननी च पूताः
तेषां च धन्यं खलु लोक जीवनम् ।
ते सन्ति पुण्या निपुणाजनाये
पठन्ति जानन्तिवदन्ति संस्कृतम् ॥६॥

सा भारते संस्कृत भारती नः
गिरां समासांजननी च तासाम् ।
पुष्णाति लोकव्यवहारभाषा
सर्वासु भाषासु विभाति संस्कृतम् ॥७॥



शिक्षा-सम्मेलन में पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ के भूतपूर्व कुलपति डॉ० सूरजभान जी भाषण करते हुए साथ में बैठे हुए हैं—डॉ० स्वामी प्रकाशानन्द जी भूतपूर्व अध्यक्ष–रसायन विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय

कांटों से नेह लगाने वालो........

महावीर 'नीर' विद्यालंकार

कांटों से नेह लगाने वालों को,
नही फूलों के हार मिला करते है ।
तूफानों से टकराने वालों को,
नहीं कूल-कगार मिला करते हैं ॥
जो बने रहनुमा जग भर के साथी,
उनको तपना पड़ता है जीवन में ।
दुनिया की पीर मिटाने वालों को,
नहीं सुख-आधार मिला करते है ..

क्यों अधीर हो उठे आज परवानो,
कुछ तो धीरज को बांधों ।
उपवन में रंगत लाने वालों को,
कड़ुवे, मोठे, व्यवहार मिला करते हैं...
कब तक दासत्व तुम्हें बांधेगा,
युग करवट लेता ही रहता है ।
हर दिल की पीर हटाने वालों को,
नही दर-२ से प्यार मिला करते है....

पाषाणों में गति देने वालों को,
कंकालों में ज्वाला भरने वालों को ।
प्रतिकूल धार से लड़ने वालों को,
नही हर पथ आसान मिला करते हैं....
जिनको केवल निज कर्म सदा प्यारा है,
जो तुच्छ कीर्त्ति के कागज नहीं हैं पाते ।
ऐसे निज अस्तित्व मिटाने वालों को,
नादान से, दुत्कार मिला करते है......
ए ! 'नीर' बगावत कैसी,
कैसा माली से झगड़ा ।
दुनियां में कुछ करने वालों को,
नहीं सदा सत्कार मिला करते हैं.

गतांक से आगे–

शिशु का जातकर्म संस्कार

स्वस्थ जीवन एवं सुखी आदर्श समाजका मूलाधार

आचार्य ब्रह्मदत्त शर्मा आयुर्वेदालंकार, २८५।१३।सी–४बी, जनकपुरी, नयी दिल्ली–५८)

इस परिवर्तन का एक ही उपाय है—– 'संस्कार' अर्थात् 'गुणान्तराधान,' सम्परिवर्तन, आमूल-परिवर्तन, पुनर्नवी-करण। 'दशमुख' को 'दशरथ' बनाने तथा बनाये रखने के इस प्रयोजन से ही प्राचीन ऋषि-मुनियों ने वैदिक संस्कृति में तथा समाज में संस्कारों की प्रथा डाली थी जो आज-दिन तक भी थोड़ी-बहुत प्रचलित है हमें उसे पुनः पूर्णतया जागृत करना होगा। समाज तथा राष्ट्र को राक्षसयुगीन सर्वनाश से बचाने के लिए संस्कार ही एकमात्र शान्ति-पूर्ण उपाय है, 'नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय'। अन्यथा, -रक्तसय-क्रान्ति' होगी, 'महाभारत' मचेगा, जिसका स्वरूप हिंसा पूर्ण होगा तथा परिणाम प्रायः ध्वंसात्मक होगा, सृजनात्मक नहीं। अतः राष्ट्र-देश-समाज एवं विश्व के हित में हमें अभी समय रहते चेतना तथा नवनिर्माण प्रारम्भ करना युगोचित एवं आवश्यक है।

'जात कर्म संस्कार'—

अर्थात्, नवजातशिशुका प्रथम संस्कार। प्रसवक्रिया द्वारा जब शिशु का जन्म होता है, तो सर्वप्रथम यही किया जाता है। इसके द्वारा शिशु के जीवन में स्वास्थ्य-साद्गुण्य एवं सच्चरित्रता की आधारशिला रखी जाती है। जीवन के इन प्रारम्भिक क्षणों में जो क्रिया की जाती है उससे जहाँ स्वस्थ-सद्गुणी-सच्चरित्र व्यक्ति का निर्माण होगा वहाँ समाज एवं राष्ट्र तथा विश्व भी स्वस्थ, परस्परोपकारी एवं जीवन-स्पृहणीय बनेगा। अर्थात्, सुखी स्वस्थ व्यष्टिजीवन तथा आदर्श समाज एवं विश्व बनाने के लिए पहली मूर्त्त सीढ़ी यह 'जातकर्मसंस्कार' है।

जात कर्म संस्कार की विधि–

इस संस्कार के पूर्वविधि-उत्तरविधि ये दो अंग होते हैं। पूर्वविधि का स्थल प्रसूतिकक्ष होता है तथा उत्तरविधि गृह में सामाजिक रूप मे सम्पन्न की जाती है। पूर्वविधि जन्म-परक होती है तथा उत्तरविधि जन्मोत्तरकालीन।

पूर्वविधि—

इसका प्रारम्भ तबसे होता है जब गर्भिणी में प्रसवकालीन वास्तविक आवियाँ प्रारम्भ होती हैं। ऐसी प्रसोष्यन्ती गर्भिणी में बलाधान तथा आश्वासन के लिए अभिमन्त्रित जल का अभ्यासेक (छिड़कना) किया जाता है।१ अभिम-न्त्रण के लिए पढ़े जाने वाले मन्त्रों से यह प्रार्थना की जाती है कि दश मासोंवाला प्रस्तुत गर्भ सलग्न जरायु (आंवल,) आवियों द्वारा विचलित होकर निर्बाध रूप मे बाहर निकल आवे, निर्गमन मार्ग

१ 'सोष्यन्तीमद्भिरभ्युक्षति।' (पारस्करगृह्यसूत्र। का०१।क०१६)।तथा च–आश्वलायन गृह्यसूत्र (१।१४।१–३), गोभिलीयगृह्यसूत्र, प्रभृति में भी ऐसा ही विधान है।

से कोई मांस-आदि-जनित अवरोध न हो तथा जरायु भी न रुके।२प्रसोष्यमाणा गर्भिणी की सुरक्षा के लिए भी प्रार्थना की जाती है ।३

प्रसवद्वारा गर्भ एवं जरायु के बाहर आ जाने पर यदि उल्ब (गर्भावरण) बिना फटे साथ ही निकला हो तो नवजात के मुख-नासा-श्वासपथ-आदि को स्वच्छ करने के लिए तुरन्त इस उल्ब को फाडकर पृथक् कर देना अत्यन्त आवश्यक होता है। एतदर्थ सैन्धवमिश्रित घृतक परिषेकार्थ तथा उष्ण जलका प्रक्षालनार्थ उपयोग किया है ।१ तालु-ओष्ट-कण्ठ-जिह्वा-कर्ण-नेत्र-आदिका भी कोष्णजल से भीगी रूई की फुरहरी (पिचु) द्वारा शोधन किया जाता है ।२ प्रसूतिक्रिया में सिर पर लगे अभिघात-दबाव-खरोंच-आदि के क्लेशनिवारणार्थ सिर एवं शिरस्तालु पर बलातैलका परिषेक किया जाता है ।३ तथा, घृताक्त कार्पास-पिचु रखकर तर्पण किया जाता है ।४ तदनन्तर नाभिनाल का यथाविधि कर्तन करके कुष्ठतैल लगाकर पट्टी बाँधकर तथा उसके सिरे के साथ तागा बाँधकर नवजात के गले में शिथिल रूप में अटका दिया जाता है, ताकि उलझे नही।५ फिर बलातैल मल कर क्षीरिवृक्षों-आदि के क्वाथ में सुगन्धित द्रव्य मिलाकर उस द्रव से स्नान कराया जाता है ।६ यह सारी विधि प्रसूति-कक्ष में प्रसाविका-चिकित्सि-का-दाई-आदि द्वारा की जाती है ।

उत्तरविधि—

यह जन्मोत्तरकालीन विधि है तथा इसका स्वरूप पारिवारिक एवं कर्मकाण्डपरक अधिक है।

---

२ (क) 'ओम्! एजतु दशमास्यो गर्भो जरायुणा। सह । यथायं वायुरेजति यथा समुद्र एजति। एवायं दशमास्यो अस्रज्जरायुणा सह।' (यजुर्वेद ।८।२८।। पारस्कर०।१।१६।१)।

(ख) 'ओम् । अवैतु पृश्निशेवलꣳ शुने जरायवत्तवे । नैव या ꣳ सेन पीवरी न कस्मिंश्चना यतनमव जरयु पद्यताम् ।।' (पारस्करगृह्यसूत्र ।१।१६।२)। (चरक । शरीर ।८।२८) ।

३ 'क्षितिर्जलं वियत्तेजो वायुर्विष्णुः प्रजापति.। सगर्भां त्वां सदा पान्तु वैशल्यं च दिशन्तु ते ।।,

१ (क) जातमात्र विशोध्योल्बाद् बालं सैन्धवसर्पिषा, '(अष्टांगहृदय । उत्तर०।१।१)।

(ख) अथ जातस्योल्बमपनीय, मुख च सैन्धवसर्पिषा विशोध्य. . .' (सुश्रुत ।शा०।०।१०।१२)

२ 'अथास्य ताल्वोष्ठकण्ठजिह्वा प्रमार्जनमारभेतां-गुल्या सुपरिलिखितनखया सुप्रक्षालितपि- धानका-र्पासपिचुमत्या!' (चा।२।।८.४३)

३'प्रसूतिवलेशित चानु बलातैलेत सेचयेत् ।। '(अ० हृ० ।उ०।१।१)

४ (क) 'प्रथमं प्रमार्जितास्यस्य चास्य शिरस्तालु का पसिपिचुना स्नेहगर्भेण । संछादयेत् । '(च०।शा० ।८।४३)।

(ख) 'घृताक्तं मूर्ध्नि पिचुं दद्यात्।' (सुश्रुत । शारीर ।१०।१२)। सयगबध्नीयात् ।।' (सु०।२।।०।१०।१२)।

५ (क) 'ततो नाभिनाडीमष्टांगुलमायम्य सूत्रेण बद्ध्वा छेदयेत्, तत्सूत्रैकदेशं कुमारस्य ग्रीवायां ।

(ख) 'नाभिं च सूत्रेण चतुरंगुलात् । बद्ध्वोर्ध्वं वर्धयित्वा च ग्रीवायामवसंजयेत् ।।हृ०।उ०।१।५)

(ग) 'ततः कल्पनं नाड्याः।. .छेदयेत् । तामग्रं सूत्रेणोपनिबध्य कण्ठेऽस्य शिथिलमवसृजेत् ।' (च०३।।०।८।४४)

६ 'स्नपयेदनु । या क्षीरिवृकषायेण सर्वगन्धोदकेन वा ।। कोष्णेन' (अन्तगहृदय । उत्तर०।१।६)।

गतांक से आगे—

एक महान् क्रान्तिकारी परिवार

शहीदे आज़म सरदार भगतसिंह के बुजुर्गों की मुख्तसर कहानी

अज़ श्रीमती वीरेन्द्र सिन्धू एम० ए०

सियासत में इन्हें लोकमान्य तिलक का साथ मिला। तब सरदार किशन सिंह कांग्रेस में दिलचस्पी लेने लगे थे। इनके छोटे भाई सरदार अजीत सिंह भी उनके साथ ही लोकमान्य तिलक से मिलते रहते थे। लोकमान्य तिलक का इन दोनों पर बहुत असर पड़ा। इन्हीं दिनों पंजाब में इनक्लाबी तहरीक शुरू हुई। सूफी अम्बा प्रसाद, लाला हरदयाल, सरदार करतार सिंह केसर गढ़िया, लाला लालचन्द तिलक, महाशय घसीटा राम, सरदार श्रवन सिंह, महता नन्दकिशोर, लाला केदार नाथ सहगल, जियाउल हक, लाला पंडेदास वगैरह इस तहरीक में पेश थे। सरदार किशन सिंह की सदारत में एक रोजाना अखबार सहायक में निकाला गया। भारत माता सोसायटी के जलसों में अपने भाषणों से आग लगाना सरदार अजीत सिंह का काम था। सोसायटी के काम को गांव-गांव सरदार श्रवन सिंह फैलाया करते थे। तीनों भाई इन्क्लाबी तहरीक के ब्रह्मा, विष्णु और महेश थे।

नेपाल में

सन् १६०७ में सरदार अजीत सिंह को मांडले (बर्मा) में नजरबन्द किया गया। सरदार किशन सिंह नेपाल चले गये। सूफी अम्बा प्रसाद और महता नन्दकिशोर भी इनके साथ थे। नेपाल सरकार से सरदार किशन सिंह का पहले से ही तालुक था। वहां बतौर शाही मेहमान इन्हें उसी मकान में ठहराया गया जहां कभी लार्ड किचनर को ठहराया गया था। नेपाल के प्रधान मंत्री महाराज चन्द्र शमशेर जंग बहादुर राना सरदार किशन सिंह की बातों से बहुत मुतासिर हुए। राना ने अपने बेटे को सियासत की तालीम हासिल करने के लिये रोजाना इनके पास भेजना शुरू किया।

सरदार किशन सिंह ने हिन्दुस्तान में इनक्लाब लाने के लिये हुकूमत नेपाल से फौज की मदद मांगी। इन्होंने नेपाल से हथियार हासिल करने की भी बात-चीत की। जब अंग्रेज सरकार को पता चला तो उसने नेपाल सरकार से मुतालबा किया कि इन लोगों को उसके हवाले करदे। नेपाल सरकार ने ऐसा किया तो जरूर लेकिन उसने इनको पालकी में बिठाकर सरहद पर भेजा। हिन्दुस्तान पहुंचने पर अंग्रेज डी०एस०पी०मिस्टर फिलिप पर हमला करने और सरकार के खिलाफ बगावत फैलाने का मुकदमा चलाया गया। लेकिन बाद अज़ां लंदन में बरतानवी हुकूमत ने अपनी पालीसी तब्दील करदी। सरदार किशन सिंह को पचास हजार की जमानत पर रिहा कर दिया गया। सरदार अजीतसिंह को मांडले की नजरबन्दी से छोड़ दिया गया और चीफ कोर्ट ने सरदार श्रवन सिंह को बरी कर दिया। ये तीनों जिस रोज एक साथ घर पहुंचे उसी रोज सरदार भगत सिंह का जन्म हुआ।

सरदार अजीतसिंह फरार

सरदार अजीतसिंह पर सरकार की कड़ी निगाह थी। इनके घर के बाहर बीसियों सी० आई०डी० वाले तायनात थे। एक-एक मिनट की खबर सरकार को मिला करती थी। सरदार

किशन सिंह ने सरदार अजीत सिंह को देश से कहीं और चले जाने का मशिवरा दिया। लेकिन अब सवाल यह था कि सरदार अजीत सिंह घर और गांव से बाहर कैसे निकलें। लेकिन सरदार किशन सिंह ने इनके फरार होने का कामियाब मंसूबा तैयार किया। पुलिस वाले संगीनें लिये पहरे पर खड़े रहे और सरदार अजीत सिंह रूपोश हो गये। जियाउलहक और सूफी अम्बा प्रसाद को भी वह साथ ले गये। करांची से होकर वे ईरान चले गये।

सरदार किशन सिंह ने अपने बच्चों को भी जंग आजादी के लियें तैयार किया। भगत सिंह को तैरना, लाठी चलाना, बासों पर चढ़कर दरिया पार करना, लम्बी सास खींचना और सख्तियां झेलना सिखाया। छोटा भाई कुलबीर सिंह जेल में था। उसकी बहन अमर कौर ने उसे जेल से भगाने की स्कीम बनाई। बीमारी के बाअस कुलबीर सिंह को लाहौर हस्पताल में लाया गया। सरदार किशन सिंह इन दिनों फालिज से बीमार थे। वह नहीं चाहते थे कि पुलिस घर वालों को ज्यादा परेशान करे। छोटी बेटी सुमित्रा ने गांव जाकर फरार का यह मंसूबा नहीं बताया। वह झट से लाहौर गये। उन्होंने अमर कौर से कहा कि में बीमार हू, हो सकता है कि पुलिस की सख्तियों के बाअस मेरे मुंह से कुछ निकल जाय। इसलिये मुझे कुलबीर के फरार के मुतालिक कुछ न बताओ। मेरे पास यह पांच सौ रुपये हैं। इसे ले जाओ और अपना काम करो।

जिस रोज भगत सिंह को फांसी हुई उस रोज लाहौर में एक बड़ा जुलूस निकला जिसके आखिर में मोरी दरवाजा के बाहर जलसा हुआ। इसमें सरदार किशन सिंह ने पुरजोर तकरीर की। जलसे में जोश फैला हुआ था। पास ही मिलाप के दफ्तर में कुलतार सिंह बैठे थे। इतने में वहां टेलीफोन आया कि भगत सिंह और उन के साथियों को फांसी घर की तरफ ले जाया जा रहा है। कुलतार सिंह दौड़ कर जलसा में पहुचे और सरदार जी को खबर दी। सरदार किशन सिंह यह सुन कर जरा परेशान न हुए। उन्होंने कुलतार सिंह को बैठा दिया और बाकायदा तकरीर करते रहे। इतने में एक ग्वाला दौड़ता हुआ आया। वह जेल में दूध दिया करता था। उसने खबर दी फांसी लग गई है, जा कर लाश ले आवो। जलसा में जोश फैल गया। सरदार किशन सिंह ने कड़कती आवाज मे कहा। मै लाश लेने जेल जा रहा हू। सब लोग अपनी जगह बैठे रहें। कोई जेल की तरफ न जाये। ऐसा न हो कि एक भगत सिंह लेने जायें और सैकड़ों भगत सिंह ले आयें।

बच्चों के साथ इन्हें बहुत प्यार था। वह अकसर कहा करते थे–

दीन दयाल भरोसे तेरे
सब परिवार चढ़ाया बेड़े।

लोगों में खलबली मच गई। बहुत कहने पर भी बहुत से लोग उनके साथ हो लिये। जेल पर सन्नाटा था। वह दरवाजे पर पहुंचे। अन्दर से अफसरों के कहकहों की आवाज सुनाई दे रही थी। उन्हें बहुत दिनों बाद चैन की सांस मिली थी। सरदार किशन सिंह ने जोर-जोर से आवाजें दीं और बड़े आहिनी दरवाजे को बेहद खटखटाया। मगर कोई नहीं बोला। आखिर खबर मिली कि भगत सिंह और उनके साथियों की लाशों को

जलाने के लिये कहीं बाहर भेज दिया गया है। लोग उस जगह को खोज के लिये चारों तरफ बिखर गये।

माता विद्यावती जी ने किन हालात में सितम्बर १९०७ में अपने बेटे भगत सिंह को जन्म दिया। इसका अन्दाजा इससे हो सकता है कि भगत सिंह के जन्म से एक दिन पहले तक सरदार किशन सिंह एक मुकदमे में गिरफ्तार थे। सरदार स्वरन सिंह जेल काट रहे थे और सरदार जीत सिंह मान्डले (बर्मा) में जलावतन थे। और इत्तफाक की बात है कि जिस दिन भगत सिंह का जन्म हुआ उसी रोज सब रिहा हुए।

भगत सिंह की शादी की बात चल रही थी और एक जगह से कुछ आदमी उन्हें देखने आये। सब को डर था कि भगत सिंह मना न करदे। पर उस रोज भगत सिंह पूरी मस्ती में थे। बरावर उछलते कूदते रहे, नाचते गाते रहे। माता विद्यावती से कहा 'बीबी जी, मेरी सगाई होने वाली है, जिसे जो बांटना हो बाट दे" इससे पहले कि सगाई हो। भगत सिंह अपने पिताजी की दराज से रुपये निकाल कर और उसकी जगह एक खत छोड़ कर खुद वहा से गायब हो गये। मां अपने गुमशुदा बेटे की तलाश में लाहौर के इलाके ग्वालमंडी में रहने वाले एक मशहूर ज्योतशी के पास गई। उसने भगत सिंह का कोई कपड़ा मांगा। भगत सिंह की पगड़ी पेश की गई। उस पर कुछ पढ़कर ज्योतिषी जी ने कहा" तुम्हारा बेटा कुछ दिन बाद वापस आ जायेगा। लेकिन फिर वा पस चला जायेगा। इस लड़के का भाग्य कुछ अजीब ... गरीब है। वह या तो तखत पर बैठेगा या तख्त प ... झूलेगा।"

क्रान्तिकारी परिवार में रहने वाली विद्यावती तख्त का तो ख्वाब भी नहीं ले सकती थी। इस परिवार की किस्मत में तो तख्ता ही था जोकि एकदम उसकी नजरो के सामने घूम गया और उन्हें ऐसा महसूस हुआ जैसे सैकड़ों बिच्छुओं ने एक साथ डंक चला दिये हों। भगत सिंह को एक मुकदमे में बड़ी मुश्किल से ६० हजार रुपये की जमानत पर छुड़वाया गया और उन्हें कामकाज में लगाने के लिये एक डेरी फार्म बना दिया गया। भगत सिंह तांगे पर दूध रख कर लाहौर ले जाते और फिर कई-कई बार दो-दो तीन-तीन दिन वापस न आते। जब कई दिन के बाद वापस लौटते तो भगत सिंह को देखते ही मां की आखों से आंसू टपकने लगते। भगत सिंह कुछ भी न कहते। वह रोने लगती। वह हंसते रहते, मटकते रहते या मा को छेड़ते रहते। आखिर में जीत हंसी की ही होती! मां और बेटा दोनों हंसने लगते और बेटा झट मा के आसू पोंछ देता।

भूख हड़ताल की वजह से भगत सिंह और बटकेश्वर दत्त सूख कर कांटा हो गये थे। इन्हें स्ट्रेचर पर डाल कर अदालत में लाया जाता था। माता विद्यावती की हमराह दौया नाम की एक लड़की शहीद राम प्रसाद बिसमिल की बहन बन कर अदालत में गई।

उसने जब भगत सिंह और दत्त को इस हालत में देखा तो वह छाती पीटने लगी और चिल्लाने लगी। हमारे भाई भूखे मार गये। इन जालिमों ने हमारे भाई भूखे मार दिये।

यह आवाज सुनकर अदालत में मौजूद दूसरे लोग भी चिल्लाने लगे। अदालत में कोहराम मचगया। अदालत बरखास्त करनी पड़ी, लेकिन

इस शोरगुल में कुछ मिनटों तक भगत सिंह को जेल भेजना ही भूल गये।

मजिस्ट्रेट ने कहा पकड़ लो इस लड़की को। तब भगत सिंह ने चिल्ला कर कहा यहां मेरी भा भी है, चाची भी है, बहन भी है, किस-किस को पकड़ेंगे आप।

एक रोज माता जी भगत सिंह से जेल में मुलाकात करने गई। भगत सिंह ने मां से कहा। आप भी जेल में आ जाइये। यहां साथ ही रहेंगे। आपको इतनी दूर से चल कर मुलाकात के लिए आना नहीं पड़ेगा। बेटे की बात सुनकर मां बोली। आ कैसे जाऊं। पिकेटिंग करके आ जाऊं क्या। यह करना मुझे आता नहीं है। भगत सिंह बोले नहीं,, यह हमारा काम नहीं है। तो फिर मा और बेटे के बीच मे जेल की सलाखें और दीवारें जैसे कुछ लमहों के लिये गायब हो गई। मां अज राहे मजाक बोली, तो किसी को पत्थर मार कर आ जाऊं" यह सुन कर भगत सिंह खिलखिलाकर हंस पड़े और मौके पर मौजूद दूसरे लोग भी अपनी हंसी न रोक सके। सन् १९३९-४० का जमाना आया। माता जी के दो बेटे कुलबीर और कुलतार जेलों में जा पहुंचे और इनके पिता सरदार किशन सिंह पर फालिज गिर गया। अब माता जी पर हो गृहस्थी की जिम्मेदारियां थीं। वह एक तरफ तो खेती-बाड़ी का काम करतीं और बीमार पति की तीमारदारी करतीं और कभी जलसों को सदारत करतीं। एक बार मोरी गेट (लाहौर) के बाहर उनकी सदारत में जलसा हुआ। इसमें सीधे-साधे अलफाज पर तकरीर करते हुए आपने कहा

"मेरे एक बेटे को तुमने फांसी पर लटकाया, मेरे छोटे देवर स्वरन सिंह को जेल में सजायें देकर तपेदिक का मरीज बना दिया और वह परलोक सिधार गया। मेरे दूसरे देवर अजीत सिंह को जलावतन होकर विदेशों में भटकना पड़ा। अब मेरे दो बेटों को मुकदमा चलाये बगैर गिरफ्तार कर लिया गया। क्या इन सब बातों से वह डर गई? नहीं मैं मिट जाऊंगी, पर सिर नहीं झुकाऊंगी। मैं बरतानवी राज को चेतावनी देती हूं और अपने दो बेटों को देश सेवा के लिये पेश करती हूं।

बकिया अमानत में खयानत न करो

एक राय से फैसला हुआ कि हम एक ऐसा हिन्दुस्तान चाहते हैं जो कुलवतन आजाद हो, जो हिन्दुस्तानियों का हिन्दुस्तान हो, हिन्दुओं, मुसलमानों, सिक्खों, या ईसाइयों का नहीं बल्कि सब का। उन लोगों का भी जो किसी मजहब को नहीं मानते है। तब ऐसा हिन्दुस्तान जो रिपब्लिकन हो जमहूरियत के रास्ते पर चले। फासिज्म और डिक्टेटरशिप के रास्ते पर नहीं। किसी एक पार्टी की मलकियत बनकर नहीं और फिर ऐसा हिन्दुस्तान जो मुकम्मल तौर पर सोशलिस्ट हो, समाजवादी हो, जहां हर मेहनतकश को उसकी मेहनत का मुआवजा मिले। कोई भी बगैर मेहनत के और अपने आपको देश के लिए मुफीद बनाये बगैर दूसरों की मेहनत का फल न खा जाय।

इस साफ और सीधे आदर्श को लेकर ये लोग लड़े और एक के बाद एक अपनी जाने देते चले गये। आज मुल्क के पास जो आजादी है वह इन लोगों की देन है।

उनकी अमानत। इस अमानत को हम उसी रूप में रखते हैं जिसमें भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु, चन्द्र शेखर, भगवती चरण, अशफाक उल्लाह, राम प्रसाद बिसमिल, धनवन्तरी, बिशेशर, हरी कृष्ण और दूसरे लोग रखना चाहते थे या उसमें खयानत कर रहे हैं यह हमें सोचना चाहिये। मैंने उन लोगों के साथ काम किया। मुझे मालूम है कि उनके सीने में कैसी आग थी। इस लिये बहुत अदब और प्यार से मैं सिर्फ इतना चाहती हूं, अमानत में ख्यानत न कीजिये। यह बहुत बड़ा पाप है और पाप का फल अच्छा नहीं होगा।

रनबिया

गतांक से आगे–

गुरुकुल कांगड़ी–संक्षिप्त परिचय

लेखक–डा० गंगाराम, कुलसचिव गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार ।

सन् १६०६ ई तक गुरुकुल में सात श्रेणियां हो गई थीं । जिसमें मुख्यतया संस्कृत साहित्य और व्याकरण तथा सामान्यतया अंग्रेजी और कुछ अन्य प्रारंभिक विषयों की शिक्षा दी जाती थी । अब उच्च कक्षाओं के खुलने पर यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि विज्ञान, गणित आदि आधुनिक विषयों की क्या व्यवस्था की जाय । इसी समय मा०रामदेव जी गुरुकुल में कार्य करने आये । वे एक ट्रेन्ड ग्रेजुएट थे और जालन्धर में एक स्कूल के सफल हेडमास्टर रह चुके थे। उनका विचार था कि आधुनिक युग में विज्ञान शिक्षा का आवश्यक अंग है और गुरुकुल में उसकी यथोचित व्यवस्था होनी चाहिए साथ ही वे शिक्षा सम्बन्धी नियन्त्रण के भी पक्षपाती थे। वे चाहते थे कि नियमित समय विभाग बने और सब कार्य व्यवस्थित रूप में हों । यह स्वाभाविक था, क्योंकि प्रारंभ से ही गुरुकुल को एक पुराने ढंग की पाठशाला बनाना अभिप्रेत नहीं था । गुरुकुल की प्रारम्भिक योजना में संस्कृत साहित्य और वेदांग की शिक्षा के साथ-साथ आधुनिक ज्ञान–विज्ञान की शिक्षा को भी यथोचित स्थान दिया गया था ।

महाविद्यालय विभागः–सन् १६०७में महाविद्यालय विभाग का प्रारंभ हुआ । तीन विद्यार्थी ६वर्ष तक तक विद्यालय विभाग में रहकर अधिकारी परीक्षा उत्तीर्ण कर महाविद्यालय में आये । महाविद्यालय विभाग के शुरू होने पर गुरुकुल में अनेक उच्चकोटि के विद्वान् अध्यापन के लिये नियुक्त किये गये । गुरुकुल के महाविद्यालय विभाग के इन प्रारंभिक शिक्षकों के नामों का स्मरण कर लेना यहां उचित ही होगा ।

१– महात्मा मुन्शीराम जी आचार्य
२– आचार्य रामदेव जी बी०ए०,एम०आर०ए०एस०आचार्य तथा उपाध्याय पाश्चात्य दर्शन ।
३– पं० काशीनाथ जी शास्त्री–उपाध्याय प्राच्यदर्शन ।
४– पं०शिवशंकर काव्यतीर्थ–उपाध्याय वेद ।
५– श्री बालकृष्ण राज एम०ए०–उपाध्याय–इतिहास, अर्थशास्त्र ।
६– श्री विनायक गणेश साठे–एम०ए०–उपाध्याय रसायनशास्त्र ।
७– श्री महेशचरणसिंह एम०ए०–उपाध्याय–वनस्पतिशास्त्र ।
८–श्री घनश्यामसिंह गुप्ता बी०ए०एल०बी–उपाध्याय विज्ञान ।
६– श्री सेवाराम एम०ए०–उपाध्याय आंग्ल भाषा ।
१०–श्री लक्ष्मीनारायण बी०ए०–उपाध्याय आंग्लभाषा ।
११–श्री लक्ष्मणदास बी०ए०–उपाध्याय गणित ।

शिक्षा के क्षेत्र में इस समय गुरुकुल बड़ी तत्परता से कार्य कर रहा था । महाविद्यालय स्तर तक गुरुकुल में सब विषयों की शिक्षा मातृभाषा हिन्दी के माध्यम द्वारा दी जाती थी । विज्ञान, गणित, पाश्चात्य दर्शन- आदि विषय भी हिन्दी में पढ़ाये जाते थे । उस समय हिन्दी में



श्री राज्यपाल महोदय दीक्षान्त-यज्ञ में—दांयी ओर, डॉ० गगाराम गर्ग कुलसचिव, श्री वीरेन्द्र जी सभामंत्री एवं डॉ० रामनाथ वेदालंकार आचार्य

उच्च शिक्षा देना एक असंभव बात समझी जाती थी। गुरुकुल ने इसे कार्य रूप मे परिणत करके दिखा दिया। उस समय आधुनिक विज्ञान की पुस्तकें हिन्दी मे बिलकुल न थी। गुरुकुल के उपाध्यायों ने पहिले पहल इस क्षेत्र मे काम किया और गुरुकुल से अनेक उच्चकोटि के ग्रंथ प्रकाशित हुए। प्रो० महेशचरणसिंह की हिन्दी कैमिस्ट्री प्रो०साठे का विकासवाद, श्रीयुत गोवर्धन की भौतिकी और रसायन, प्रो० राम चरण दास सक्सेना का गुणात्मक विश्लेषण, प्रो० सिन्हा का वनस्पतिशास्त्र प्रो० प्राणनाथ का अर्थशास्त्र, राष्ट्रीय आय-व्यय शास्त्र और राजनीति शास्त्र प्रो०बालकृष्ण का अर्थशास्त्र और राजनीतिशास्त्र और प्रो०सुधाकर का मनोविज्ञान हिन्दी में अपने-अपने विषय के ग्रंथ है। हिन्दी मे वैज्ञानिक ग्रंथों की रचना गुरुकुल द्वारा ही प्रारंभ हुई। इन वैज्ञानिक ग्रन्थों के अतिरिक्त अन्य बहुत उच्चकोटि के ग्रन्थ गुरुकुल ने प्रकाशित किये। प्रो०रामदेव ने भारतीय इतिहास के सम्बन्ध मे मौलिक अनुसंधान कर अपना प्रसिद्ध 'भारतवर्ष का इतिहास' प्रकाशित किया। महात्मा मुन्शीराम जी ने विविध धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन कर पारसी आदि अनेक धर्मों पर मौलिक ग्रन्थ लिखे। गुरुकल की साहित्य परिषद् ने दो दर्जन से अधिक ग्रन्थ प्रकाशित किये। ये सभी ग्रन्थ किन्हीं नये विषयों पर निबन्ध के रूप में थे। साहित्य परिषद् की ओर से गुरुकुल के वार्षिकोत्सव पर सरस्वती सम्मेलन किये जाते थे, जिनमें विविध विषयों पर मौलिक निबन्ध पढ़े जाते थे। उस समय के शिक्षित समुदाय में इन निबन्धों की बड़ी धूम थी। गुरूकुल ने छोटे बालकों के लिए पाठ्य पुस्तकें तैयार करने के लिए भी बड़ा काम किया। संस्कृत की प्राथमिक रीडरें सर्वप्रथम गुरूकुल ने ही प्रकाशित की। सब श्रेणियों के लिए हिन्दी, संस्कृतविज्ञान आदि की बहुत सी पाठ्य पुस्तकें गुरुकुल मे तैयार हुई। बाहर के भी अनेक शिक्षणालयों ने इनको अपनाया।

सन्१९०७ई० में वैदिक मैगजीन का पुनरूद्धार किया गया। इस पत्रिका के संस्थापक पण्डित गुरूदत्त थे। उनके देहान्त के साथ इस पत्रिका का भी अन्त हो गया था। वैदिक मैगजीन अंग्रेजी मे निकलती थी। पाश्चात्य संसार को वैदिक धर्म का संदेश देने तथा आर्य समाज के दृष्टिकोण से प्राच्य विद्याओं का अनुशीलन करने के लिए ही इस पत्रिका का बड़ा योगदान था। अब उसका पुनरूज्जीवन किया गया और मा० रामदेव जी उसके संपादक बने। सन्१९०७ई०से१९३२ई० तक २५वर्ष निरन्तर यह पत्रिका गुरुकुल से प्रकाशित होती रही। देश-विदेश के शिक्षित समाज में इस पत्रिका को बड़े आदर की दृष्टि से देखा जाता था।

सद्धर्म प्रचारक पहले जालन्धर से प्रकाशित होता था। महात्मा मुन्शीराम जी का सद्धर्म प्रचारक प्रेस भी जालन्धर में ही था। सन्१९०८ ई०में उसे गुरुकुल लाया गया। तब से सद्धर्म प्रचारक नियत रूप से गुरुकुल से ही प्रकाशित होने लगा। गुरुकुल का प्रचार करने में इस पत्र से बड़ी सहायता मिली। सद्धर्म प्रचारक पत्र और सद्धर्मप्रचारक प्रेस गुरुकुल को साहित्यिक जीवन का एक महत्व पूर्ण केन्द्र बनाने में अत्यन्त सफल हुए।

फल निष्पत्ति

सन्१९१२ई० में गुरुकुल से दो ब्रह्मचारी हरिश्चन्द्र और इन्द्र अपनी शिक्षा पूर्ण कर स्नातक हुए। वार्षिकोत्सव पर बड़े समारोह के साथ इन का दीक्षान्त संस्कार हुआ। गुरुकुल का यह वार्षि-

कोत्सव अद्वितीय था । जनता के उत्साह की कोई सीमा न थी। गुरुकुल के नव स्नातकों के दीक्षान्त संस्कार का दृश्य आज भी एक अद्भुत आकर्षण रखता है।

गुरुकुल विदेशियों की दृष्टि में

गुरुकुल निरन्तर लोकप्रिय होता जा रहा था। यहां ३०० के लगभग ब्रह्मचारी अपने गुरुजनों के साथ ब्रह्मचर्य और विद्या की साधना में तत्पर थे । यहां अमीर-गरीब और ऊंच-नीच का कोई भेद न था। ऋषि दयानन्द ने शिक्षा के सबंध में जो आदेश रखे थे वे यहां मूर्त रूप में दृष्टिगोचर होते थे यही कारण था कि गुरुकुल में एक विशेष आकर्षण था जो भी गुरुकुल में आता वह यहां के जीवन से प्रभावित हुए बिना न रहता ।

केवल भारतीय जनता ही नहीं अनेक विदेशियों को भी गुरुकुल ने अपनी ओर आकृष्ट किया है। इसे देखने के लिए बहुत से विदेशी विद्वान्, गुरुकुल पधारने लगे । अमेरिका के प्रसिद्ध शिक्षा विशारद श्री युतमारयन फेलस सन् १९२८ में गुरुकुल आये। । उन्होंने कई महीने गुरुकुल में रहकर इसके प्रत्येक विभाग का सूक्ष्मता के साथ निरीक्षण किया । गुरुकुल से चले जाने के बाद एक विस्तृत लेखमाला उन्होंने इलाहाबाद के प्रसिद्ध ऐंग्लो इण्डियन पत्र पायनियर में लिखी। कुछ समय बाद श्रीयुत सी० एफ०एण्ड्रूज अपने मित्र श्रीयुत पियर्सन के साथ आकर गुरुकुल में रहे । परिणाम यह हुआ कि गुरुकुल भारत से बाहर युरोप और अमेरिका में भी अधिकाधिक प्रसिद्ध होता गया । इन देशों से जो यात्री भारत आते वे गुरुकुल देखे बिना वापिस न लोटते । ब्रिटिश ट्रेड यूनियन आन्दोलन के प्रसिद्ध नेता श्रीयुत सिडनी वेब गुरुकुल आये और इस संस्था को देखकर अत्यन्त प्रभावित हुए । सन् १९१४ से लेकर पार्टी के प्रसिद्ध नेता और ग्रेट ब्रिटेन के भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री रेम्जे मेकडानल्ड गुरुकुल पधारे । उन्होंने गुरुकुल के सम्बन्ध में एक लेख में लिखा। मेकाले के बाद भारत में शिक्षा के क्षेत्र में जो सबसे महत्वपूर्ण और मौलिक प्रयत्न हुआ, वह गुरुकुल है ।

सरकार ने गुरुकुल को पहले राजद्रोही संस्था समझा । सरकारी यूनिवर्सिटियों में सर्वथा सच्ची राष्ट्रीय शिक्षा के लिए किया गया वह अद्भुत प्रयत्न था । गुरुकुल राजद्रोही है, सरकार का यह विचार तब तक दूर नहीं हुआ जब तक संयुक्त प्रान्त के लेफ्टिनेण्ट गवर्नर श्रीयुत जेम्स मेस्टटन इस संस्था को अपनी आंखों से नहीं देख गये । सर जैम्स मेस्टन गुरुकुल में चार बार आये उनकी गुरुकुल यात्रा का उद्देश्य यही था कि वे स्वयं गुरुकुल का अवलोकन कर इस बात का निर्णय करें कि वह कहां तक ठीक है । ६मार्च १९१३ को जब वे पहली बार आये उन्होंने अभिनन्दन पत्र का उत्तर देते हुए अपने भाषण में कहा— न केवल संयुक्त प्रान्त अपितु सम्पूर्ण भारत में शिक्षा के क्षेत्र में जो परीक्षण किये गये हैं गुरुकुल उनमें सबसे अधिक मौलिक और महत्वपूर्ण है।

क्रमशः

भारत का महाज्योतिर्विद् तथा बीजगणित का प्रकाण्ड पण्डित

श्री आर्य भट्ट

इन्द्रसेन आयुर्वेदालकार

वेदांगो मे पाई जाने वाली ज्योतिष् के बाद हमे २०० ई०पू० मे लिखा एक ग्रन्थ प्राप्त होता है जिसका नाम है सूर्य प्रजापति। यह जैन ग्रन्थ हैं। इस ग्रन्थ के ७०० साल बाद तक हमे नही पता कि ज्योतिष् मे क्या नई खोज हुई। ५०० ई० मे हमे श्री आर्य भट्ट का लिखा ग्रन्थ उपलब्ध होता है। इस ग्रन्थ से यह स्पष्ट सिद्ध होता है कि इस महान गणितज्ञ ने बीजगणित की आधार शिला रक्खी। जो ज्ञान इस ग्रन्थ मे लिखा मिला है उसके सम्बन्ध मे यह दावे से नही कह सकते कि वह सारा आर्य भट्ट की अपनी ही देन है या इससे पूर्ववर्ती गणितज्ञों को भी उसका श्रेय है। इस ग्रन्थ के अतिरिक्त उस काल के गणित और ज्योतिष् के ज्ञान को बताने वाली कोई और पुस्तक उपलब्ध ही नही है। इस ग्रन्थ का नाम है आर्य भट्टीय। यह ४९९ ई० मे लिखा गया था। इसके बाद आर्य भट्ट का लिखा हुआ एक दूसरा ग्रन्थ भी मिलता है जिसका नाम है 'तन्त्र'। आर्य भट्ट का जन्म ४७६ ई० मे हुआ अर्थात् कलियुग के सवत् ३५७७ मे इनका जन्म हुआ। आर्य भट्टीय ग्रन्थ का दूसरा नाम आर्य सिद्धान्त भी है।

आर्य भट्टजी के बाद एक और आर्य भट्ट भी हुए हे। वे भी बडे भारी ज्योतिर्विद थे। उनका काल ९५० ई० के लगभग का है। इसलिये जब हमे आर्य भट्ट कहना हो तो प्रथम आर्यभट्ट को जो ४७६ मे हुए आर्य भट्ट प्रथम कहते हे। और दूसरे आर्य भट्ट को आर्य भट्ट द्वितीय कहते हे। आर्य भट्ट प्रथम के सिद्धान्त को भी प्रथम आर्य सिद्धान्त कहते हे।

आर्य भट्ट प्रथम के समय एक युग ६० वर्षो का होता था। आर्य भट्ट प्रथम ने अपने जन्म के सम्बन्ध मे स्वय लिखा है कि जब वह २३ वर्ष का हुआ तो तीन युग पाद (अर्थात् सत्ययुग, त्रेतायुग और द्वापर युग) गुजर चुके थे और इतने युग पादो के गुजर जाने के बाद ६० वर्षो वाले ६० युग भी गुजर चुके थे। अर्थात् कलियुग के ६०×६० = ३६०० साल गुजर चुके थे। इस प्रकार ३६०० मे से २३ साल घटाने पर श्री आर्य भट्ट प्रथम का जन्म वर्ष पता चल जाता है।

देखिये आर्य भट्टीय काल क्रिया का दसवां श्लोक क्या कहता है--

षष्ट्यब्दानां षष्टिर्यदा व्यतीतास्त्रयश्च युगपादाः।
त्र्यधिकाविंशतिरब्दास्तदेह मम जन्मनोऽतीता।

अर्थ--जब तीन युगपाद और ६० वर्षो के ६० युग व्यतीत हो चुके थे तो मेरे जन्म को हुए हुए तीन अधिक बीस अब्द (वर्ष) हो चुके थे।

आर्य भट्ट ज्योतिष् शास्त्र एव बीज गणित दोनो विद्याओं के धुरन्धर विद्वान् थे। इन्होने अपने आर्य भट्टीय नामक ग्रन्थ को कुसुमपुर मे बैठकर लिखा था। कुसुमपुर आज कल हम पटना कहते हे और यह नगर बिहार प्रदेश की राजधानी है। देखिये निम्न श्लोक जो उनका लिखा हुआ है--

ब्रह्मकुशशिबुधभृगुरवि कुज गुरु
कोणभगणान् नमस्कृत्य।
आर्य भट्टस्त्विहनिगदति,
कुसुमपुरे अभ्यर्चित ज्ञानम्॥
आर्य भट्टीय गणितम्॥

अर्थ--मै आर्य भट्ट ब्रह्म, कुशशि, बुध भृगु रवि कुज गुरु कोण और भगणो को नमस्कार

करके कहता हूं कि यह ज्ञान मैंने कुसुमपुर में अभ्यर्चित किया । अर्थात् इस ग्रन्थ को मैंने कुसुमपुर में लिखा आर्य भट्ट यह भी कहता है कि मैंने अपनी बुद्धि से सद्-असद् ज्ञान के समुद्र में गोता लगाकर जो देवताओं की कृपा से प्राप्त किया उस ज्ञान को इस पुस्तक में लिखता हूं । देखिये निम्न लिखित श्लोक--

क्षिति रवि योगाद्दिनकृत् रवीन्दु योगात् प्रसाधि तश्चेन्दुः ।
शशि बहु योगात्तवैव तारा ग्रहाः सर्वे:
सदसद्ज्ञान समुद्रात् समुद्धृतं देवता प्रसादेन
सद्ज्ञानोत्तमरत्नं मया निमग्नं स्वमतिना ।

खोज द्वारा ऐसा पता लगता है कि आर्य भट्ट प्रथम ने दो माह ग्रन्थ लिखे थे । एक तो उस समय जबकि उस की आयु २३ वर्ष की थी । दूसरा तब जबकि वह अपनी परिपक्व आयु में था। पहले ग्रन्थ में युग का प्रारम्भ सूर्योदय से माना है । दूसरे में युग का प्रारम्भ मध्य रात्रि से माना गया है ।

आर्य भट्टीय शिक्षा परम्परा के अन्य ग्रन्थ जो अन्य ग्रन्थकारों के लिखे हुए हैं वे 'महाभास्करीय' और लघु भास्करीय' हैं । ये ग्रन्थ आर्य भट्टीय विचारों का पोषण करते हैं ।

जो युग सूर्योदय से प्रारम्भ हुआ माना जाता है उसे औदयिक कहते हैं और जो अर्द्ध रात्रि से प्रारम्भ होता है उस युग को आर्द्ध रात्रिक कहते हैं ।

आर्य भट्टीय ग्रन्थ संक्षिप्त है शुद्ध है और बहुत उत्तम शैली में लिखा गया है। सन् १८७४ में डा० एच् कर्न ने इस ग्रन्थ का सम्पादन किया था। उस पर परमाधीश्वर की लिखी हुई भट्टदीपिका नामक टीका भी मिलती है ।

लङ्कार्धरात्र समये दिन प्रवृत्ति जगाद चार्यभट. ।
भूय. स एव सूर्योदयात् प्रभृत्याह लङ्कायाम् ।

अर्थ--लंका द्वीप मे आधी रात से दिन शुरु होता है। ऐसा आर्य भट्ट ने कहा । (हमारा ग्रीनविच, आर्य भट्ट ने लंका माना था) । फिर उसी आर्य भट्ट ने लंका में ही सूर्योदय से दिन का प्रारम्भ कहा । आर्य भट्टीय पर दूसरी टीका सूर्यदेव यज्वन् की है । इस टीका का नाम भट्ट प्रकाशक है, या इसे केवल 'प्रकाशिका' कह कर भी सूचित करते हैं ।

इन दोनों टीकाओं की हस्तलिखित प्रतियाँ दक्षिणी भारत की भाषाओं में उपलब्ध हुई थी। भट्ट दीपिका नामक टीका मलयालम भाषा में मिली थी । इसकी लिपि मलयालम भाषा के 'ग्रन्थम्' अक्षरों मे थी । मलयालम भाषा में संस्कृत की सब ध्वनियों के सूचक अक्षर नही हैं । इसलिये मलयालम मे कुछ और अक्षर बनाये गये हैं ताकि संस्कृत के सब अक्षरों की ध्वनियों को लिखा जा सके और बोला जा सके । इस लिपि को ग्रन्थम् लिपि कहते हैं । प्रकाशिका नामक टीका उपरोक्त दोनों टीकाओं में से अधिक पुरानी है । दीपिका के कई स्थलों पर प्रकाशिका टीका के उद्धरण दिये गये हैं ।

आर्य भट्टीय के दो भाग हैं । एक गणित स्कन्ध, दूसरा--जातक स्कन्ध ।

शेष ग्रन्थ पर विचार फिर कभी किया जायगा ।

शिक्षा–सम्मेलन की रपट

हरिद्वार–१३ अप्रैल १९७६

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के ७६ वें वार्षिकोत्सव पर आधुनिक परिप्रेक्ष्य में शिक्षा प्रणालियों पर विचार करने के लिये शिक्षा सम्मेलन का आयोजन हुआ। सम्मेलन की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री भूतपूर्व कुलपति कुरुक्षेत्र तथा चण्डीगढ़ विश्वविद्यालय पद्मभूषण डा० सूरजभान जी ने की। गुरुकुल विश्वविद्यालय के कुलपति श्री बलभद्र कुमार जी ने मान्य अतिथि को माल्यार्पण किया तथा उनके शिक्षा-क्षेत्र मे की गई सेवाओं का परिचय दिया। सम्मेलन का उद्घाटन प्रयाग विश्वविद्यालय के रसायन विभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष डा० स्वामी सत्यप्रकाशानन्द जी ने किया। प्राचीन भारत मे रसायन का विकास की भारतीय परम्परा जैसी अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति की कृतियो के लेखक के रूप मे स्वामी जी शिक्षा-क्षेत्र में चर्चा के विषय रहे है। स्वामी जी ने उद्घाटन भाषण मे कहा–ब्रिटिश सरकार जब शिक्षा के माध्यम से भारत के नव–युवको को मानसिक पराधीनता की शृंखलाओ मे जकड़ रही थी तब आर्य समाज ने बिना किसी भेदभाव के शिक्षा का द्वार सबके लिये खोल देने का आह्वान किया। आज आवश्यकता है कि भारत के पुनर्निर्माण मे आर्य समाज के सांस्कृतिक, सामाजिक, चारित्रिक तथा शिक्षा सम्बन्धी विचारो को क्रियात्मक रूप मे परिणत किया जाय।

प्रमुख वक्ता के रूप मे भूतपूर्व कृषि राज्य मंत्री भारत सरकार प्रो० शेरसिह ने विषय का विस्तार करते हुए कहा कि आर्य समाज की स्थापना नाना मतो और सम्प्रदायो के कारण फैलने वाले विद्वेष को दूर कर जीवमात्र के कल्याण की कामना के साथ हुई थी। सार्वभौम मनुष्यत्व का निर्माण कर व्यक्ति और समाज के बीच की दूरी को पाटना एव समस्त मानव जाति की सर्वतोमुखी उन्नति का ध्येय उसका अन्तिम लक्ष्य है।

भारतीय इतिहास, राजनीतिशास्त्र, पुरातत्व और सस्कृति के प्रसिद्ध विद्वान्, मंगला प्रसाद पारितोषिक के समाहृत, गुरुकुल विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलपति डा० सत्य केतु विद्यालकार ने गुरुकुल शिक्षा को सांस्कृतिक क्रान्ति का प्रतीक बताते हुए कहा–शिक्षा का उद्देश्य सामाजिक परिवर्तन तथा राष्ट्रीय वातावरण का निर्माण करना है। भारतीय परिवेश को ध्यान मे रखते हुए समाज विज्ञान, विज्ञान तथा मानविकी के विषयो पर उत्कृष्ट मौलिक ग्रथों का सृजन हिन्दी में होना चाहिए तभी शिक्षक–शिक्षार्थी उल्लेखनीय उपलब्धि पा सकते है। गुरुकुल ने स्वतन्त्रता से पूर्व ही इस दिशा में सक्रिय कदम उठाया था, अन्य विश्वविद्यालयों के लिए यह अनुकरण का विषय रहा है कि हिन्दी माध्यम मे उक्त विषयो पर उच्चतम अध्यापन–अनुसंधान सर्वप्रथम इसी विश्वविद्यालय में हुआ। गुरुकुल विज्ञान महाविद्यालय के प्राचार्य श्री सुरेशचन्द्र त्यागी ने छात्र-छात्राओं तथा अध्यापको के निरर्थक लक्ष्य का विश्लेषण करते हुए बताया कि आज वास्तविक ज्ञान की अपेक्षा हम उपाधियों के पीछे दौड़ रहे

है, अत. शिक्षा का मूल लक्ष्य पिछड गया है।

अन्त में अध्यक्षीय पद से बोलते हुए डा० सूरज भान जी ने कहा–सत्य के प्रकाश के लिए आर्य-समाज ने शिक्षा के क्षेत्र मे क्रान्तिकारी कार्य किया। गुरुकुलो और डी० ए० वी० कालेजो की स्थापना के साथ देश के इतिहास में एक नई चेतना आई। भारतीय संस्कृति के अध्ययन को प्रोत्साहित और प्रचारित करने के साथ अग्रेजी साहित्य और विज्ञान के क्रियात्मक पक्ष पर भी इन संस्थाओं ने बल दिया। उत्तर भारत के शिक्षण क्षेत्र में आर्यसमाज ने इन संस्थाओं द्वारा अतुलनीय योगदान दिया। भारत के सांस्कृतिक पुनर्जागरण मे यह भारतीय सचेतना मूलभूत कारण रही है। आधुनिक शिक्षा–प्रणालियो की चर्चा करने का यहा समय नहीं है किन्तु शारीरिक, प्राणिक, मानसिक शिक्षा के साथ अनुभव प्रधान व्याव-हारिक और लोकोपयोगी शिक्षा की आवश्यकता हमे दृष्टिगोचर हो रही है। नैतिक और आध्या-त्मिक ज्ञान के साथ आधुनिक विषयों की शिक्षा द्वारा देश की सामाजिक और आर्थिक प्रगति मे सहायक होना, शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य है।

शिक्षा सम्मेलन के संयोजक डा० विष्णुदत्त राकेश ने अफ्रीकी मुक्ति संघर्ष की चर्चा करते हुए कहा कि शिक्षा आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की उप-लब्धियों का पुस्तकीय ज्ञान प्राप्त करना ही नहीं है, उसके द्वारा मानवीय सवेदना का बोध तथा भागवत चेतना का जागरण भी अपेक्षित है। रंग, वर्ग, विचार का भेद समाप्त करना ही शिक्षा का लक्ष्य है और आर्य समाज ने इस दिशा मे क्रान्तिकारी कदम उठाया था। वर्तमान भयावह परिस्थितियों मे गुरुकुल-शिक्षा-प्रणाली अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

इस परिचर्चा मे श्री सच्चिदानन्द शास्त्री, अनुसधायक लखनऊ विश्वविद्यालय, डा० सत्यदेव प्रसाद वेदालकार, अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, मगध विश्वविद्यालय, आचार्य प्रियव्रत वेद-वाचस्पति विद्यामार्त्तण्ड, कुलाधिपति श्री पृथ्वी सिह जी आजाद तथा सभा मंत्री श्री वीरेन्द्र जी भी उपस्थित थे। तदुपरान्त विश्वविद्यालय की क्रीडा प्रतियोगिता तथा संग्रहालय सप्ताह सांस्कृ-तिक कार्यक्रम के पुरस्कृत छात्रों को डा० सूरज भान जी ने पुरस्कार प्रदान किए। मुख्य अतिथि के आशीर्वाद के साथ सम्मेलन समाप्त हुआ।

डॉ० विष्णुदत्त राकेश
संयोजक

व्रत प्रधान भारतीय शिक्षा

स्वामी समर्पणानन्दजी

आज मानव समाज की अत्यन्त दुर्दशा है। प्राकृतिक वैभव अपनी पराकाष्ठा पर पहुंच चुका है। किन्तु उसका फल विध्वंस ही विध्वंस दीख रहा है। इसका कारण क्या है? प्रकृति के जिन तत्वों को मानव ने खोज निकाला है, उनके सदुपयोग के लिए जो सदाचार, भ्रातृभाव तथा जितेन्द्रियता अपेक्षित है, वह आज मानव समाज में नहीं है, इससे बढ़कर दुःख की क्या बात है कि मानव समाज इसका उपाय ठीक नहीं सोच रहा है। आज समाजवादी तथा साम्यवादी लोग कहते हैं, कि यदि भोज्य पदार्थ पर्याप्त मात्रा में उत्पन्न हो तथा उनका वितरण ठीक हो तो मानव समाज के दुःख दूर हो जायेंगे। वह बात कुछ अंश तक ठीक है। जो लोग भूख और दरिद्रता के कारण बुराइयां करते हैं, वह इससे दूर हो जायगी, परन्तु भूख और दरिद्रता से बढ़कर तृष्णा और भोगवाद है। उसकी चिकित्सा तो क्या करनी थी, समाजवादी और साम्यवादी दोनों उसको बढ़ाने में लगे हुए हैं।

दरिद्रता और भूख के कारण ही बहुत अंश तक यह भोगवाद है। वितरण के दोष इसी से उत्पन्न होते हैं। आज संसार में अन्न और वस्त्र की इतनी कमी नहीं, जितनी मनुष्यता की है। उसको उत्पन्न करने के साधन हैं, ईश्वर भजन, त्याग, ब्रह्मचर्य, जितेन्द्रियता, सत्सङ्ग और इन सबको एक शब्द में कहना हो तो वह है उत्तम-शिक्षा। उस की ओर मानव समाज का ध्यान नहीं जा रहा। हमारी सम्मति में उत्तम-शिक्षा मानव समाज की अन्तिम शरण है।

परन्तु उत्तम शिक्षा का लक्षण भी तो कुछ होना चाहिए। यही बात आज हम इस लेख में दिखाना चाहते हैं। आज हम शिक्षाशास्त्र का परम मौलिक, परमोपयोगी, परमापेक्षित, सिद्धान्त संसार के सामने रखना चाहते परन्तु न जाने इसका शिक्षा शास्त्र में उपयोग क्यों नहीं किया जाता। वह सिद्धान्त है व्रत हम किसी सैनिक को सेना में भर्ती नहीं करते, जब तक उसको झण्डे के सामने खड़ा करके राष्ट्र की उससे शपथ नहीं ले ली जाती। इसी प्रकार राष्ट्रपति, सेनापति, राष्ट्र के मन्त्रिमण्डल, संसद के सदस्य आदि सब लोगों से शपथ ली जाती है। हमारा गृहस्थ आश्रम इसी शपथ के आधार पर खड़ा है। विवाह क्या है? स्त्री, पुरूष के एक दूसरे के सुख-दुःख में जीवन भर साथ देने की शपथ। वह शपथ हवन–कुण्ड के सामने हो, चाहे रजिस्ट्रार के दफ्तर में, इससे कुछ अन्तर नहीं पड़ता, शपथ तो शपथ है।

किन्तु मनुष्य के भविष्य जीवन के मूलाधार शिक्षणालय में कोई शपथ नहीं।

प्राचीन ऋषि मुनियों ने इसी रहस्य को समझ उपनयन संस्कार चलाया था। मानव जाति के तीन महाशत्रु है। (१) अभाव (२) अन्याय (३) अविद्या।

प्राचीन मर्यादानुसार प्रत्येक विद्यार्थी को विद्या आरम्भ से पहले इन तीन महा शत्रुओं में से एक के साथ लड़ने के लिये अपना जीवन समर्पण करना पड़ता था। इसके लिये जो दीक्षा दी जाती है वही उपनयन संस्कार था। इसलिए प्राचीन काल में विद्यार्थी को व्रती या वर्णी कहते थे। वर्णी इसलिए कि वह इन तीनों में से एक शत्रु नाश के लिए व्रत करता था। अभाव दुःख से लड़ने का व्रती वैश्य, अन्याय दुःख से लड़ने का व्रती क्षत्रिय, अविद्या दुःख से लड़ने का व्रती

ब्राह्मण कहलाता था। जो अयोग्यता के कारण इन तीनों में से कुछ न बन सके, वह यदि अपनी अवस्था पर शोक करके इनमे से किसी के पास रहकर अपनी सुश्रुषा द्वारा व्रत पालन का लाभ लेता था, वह शूद्र कहलाता था। वह चुनाव करता था कि दुष्ट की सेवा नहीं करूंगा। किसी न किसी लोक सेवक की ही सेवा करूंगा, यह उसका चुनाव था। इसलिए यह भी वर्णी कहलाता था।

आज की शिक्षा में व्रत का कोई स्थान नहीं, न कोई व्रत की महिमा की और ध्यान देता है। अब देखिये कि यदि किसी दुर्बल पर मार पडे, तो व्रती तो मर मिटेगा, किन्तु व्रतहीन कहेगा मुझे क्या गरज पडी है जो मै इसकी मुशीवत मे भाग लूं। बस यह पराई मुसीमत मे अपने आपको मिटा देने की दीक्षा ही थी जिसने प्राचीन काल मे मानव जाति को इतना ऊचा उठाया था।

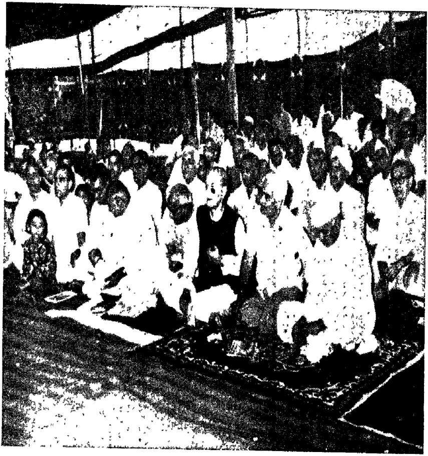
ब्राह्मण कहता था यदि नगर व ग्राम में एक भी विद्याहीन है तो मुझे धिक्कार है। क्षत्रिय कहता था कि यदि नगर व ग्राम में एक दुर्बल पर भी बलवान अत्याचार करता है तो मुझे धिक्कार है, मेरे जीने से क्या लाभ, वैश्य कहता था कि यदि मेरे नगर व ग्राम मे कोई भोजन बिना भूखा मरता है तो मुझे धिक्कार हैं। मनु ने लिखा है यदि कोई मनुष्य जिसे मजदूरी न मिले तो, जिसके घर भोजन पका हो, उससे कह कर उठा कर खाले, उसे चोरी या डाके के अपराध में नहीं पकडा जायेगा। बस जो कुछ आज साम्य-वादी चाहते है वह इसमें बहुत सुन्दरता से हो जाता था, सच कहिएतो उससे अधिक होता था।

बस हमारी सस्कृति का मूल तत्व है अधि-कतम मात्रा मे स्वेच्छा पूर्वक श्रम और बल का न्यूनतम प्रयोग।

इस अधिकतम स्वेच्छापूर्वक श्रम की भावना जागृत करने का उपाय है शिक्षा के पहले की दीक्षा।

यह दीक्षा ही प्राचीन शिक्षा शास्त्र का वह आदर्श सिद्धान्त है, जिसके कारण हम कह सकते है कि इस दुखी मानव समाज की शिक्षा मान-वता की दीक्षा ही है।

—०—



शिक्षा-सम्मेलन का एक दृश्य—दांयी ओर से प्रो० शेरसिंह, भूतपूर्व कृषि राज्य मंत्री, श्री बलभद्रकुमार जी कुलपति, श्री वीरेन्द्र जी सभा मंत्री, आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति, डॉ० गंगाराम गर्ग कुलसचिव एवं डॉ० विष्णुदत्त राकेश संयोजक

आर्यभट्ट

श्री पदमसिंह देशवाल

१९ अप्रैल १९७५से आर्य भट्ट का नाम बार-बार प्रकाश मे आ रहा है। इस दिन भारत के वैज्ञानिकों ने एक उपग्रह छोडकर इस देश मे विज्ञान और तकनीकी क्षेत्र मे हो रही प्रगति का परिचय दिया है। इस उपग्रह को छोडने के लिये यह दिन विशेषरूप से चुना गया था। इस दिन इस देश में एक महान् गणितज्ञ का जन्म हुआ था। भारत के वैज्ञानिकों ने उसका जन्म-दिवस एक उपग्रह छोडकर मनाया था और उसे श्रद्धाजलि समर्पित की थी उस महान् गणितज्ञ के नाम पर ही इस उपग्रह का नाम आर्य भट्ट रखा गया है।

प्रसिद्ध गणितज्ञ आर्य भट्ट का जन्म १९अप्रैल४७६ को पाटलीपुत्र (जिसे आजकल पटना कहते है) के पास कुसुमपुरा नामक गॉव मे हुआ था। भारत मे उस समय गुप्तकालीन राज्य था। उस राज्य मे साहित्य, ज्योतिष और गणित आदि कलाओं का विशेष विकास हुआ था। कालिदास ने अभिज्ञान शाकुन्तलम् उसी समय मे लिखा था। आर्यभट्ट ने भी अपनी सर्वोत्तम उपलब्धि आर्य-भाटियम् नामक पुस्तक की रचना उसी समय मे की थी जो उन्होंने सन् ४९९ मे लिखी थी। गणित के क्षेत्र में इस देश की देन के रूप मे यह पहली पुस्तक थी जो विश्व-ख्याति को प्राप्त हुई थी। इससे पहले इस देश मे गणित कोई खास विकसित नही समझा जाता था।

साहित्य के क्षेत्र मे कालिदास के अभिज्ञान शाकुन्तलम् ने जो विश्व-ख्याति प्राप्त की है ठीक उतनी ही ख्याति आर्यभट्ट के 'आर्यभाटियम्' ने गणित के क्षेत्र मे प्राप्त की है। उन्होने अंक-गणित, बीजगणित और रेखागणित सभी मे महत्व-पूर्ण योगदान दिया है। आर्यभट्ट आधुनिक बीज-गणित के जन्मदाता है। वे सबसे पहले गणितज्ञ है, जिन्होने द्वितीय कोटिका समीकरण का हल निकाला है। इससे पूर्व केवल प्रथम कोटिका समीकरण तक ही हल निकाला गया था। जिस शून्य के जन्मदाता भारतीय गणितज्ञ 'रामानुजन्' है, आर्यभट्ट ने उस शून्य के महत्व का भली-भांति वर्णन किया है। आर्यभट्ट और दूसरे भारतीय विद्वानों ने कुछ विशेष प्रकार के अनिश्चित समीकरण को हल करने का नियम दिया है, जिससे सिद्ध होता है कि उन्हे वितत भिन्न की अच्छी जानकारी थी। रेखागणित मे उन्होंने त्रिकोणमितीय फलन की परिभाषा दी है। ससार के पहले गणितज्ञ है जिन्होने पाई' (π) जो गणित मे एक विशेष अंक है, का चार दशमलव तक सही मूल्यांकन किया है। जिसका मूल्य आज के दूसरे तरीको से जॉच करने पर सही पाया गया है। दूसरे अनेक विद्वानो ने अपने-अपने तरीको से 'पाई' का मूल्य निकालने का प्रायस किया, परन्तु सभी के आंकडे 'पाई' के आज के मूल्य (२२।७) से भिन्न पाये गये हैं। यह उनकी सबसे बड़ी देन रही है। उन्होंने इसके लिये एक विशेष तरीका खोजा था, जिसे बाद मे भारतीय और अरब के गणितज्ञो ने अपनाया है। अभी हाल में हुए अनुसंधान कार्यों से 'यह ख्याल कि आर्यभट्ट का 'पाई' का मूल्य यूनानी तरीको पर आधारित है, निराधार सिद्ध हुआ है। खगोल विज्ञान में भी उनका योगदान महत्वपूर्ण रहा है। उन्होंने पृथ्वी का सूर्य के इर्दगिर्द चक्कर लगाने के महत्त्व

को समझकर अनेक महत्वपूर्ण परिणाम निकाले हैं। अनेक खगोलीय पिन्डों के भौतिक प्राचल ज्ञात किये हैं। उदाहरणार्थ पृथ्वी और चन्द्रमा के व्यास के माप निकाले हैं।

आर्यभट्ट की उपलब्धियों से प्रेरणा लेकर ही अथक परिश्रम के बाद प्रो· एस धवन और प्रो यू· आर राव के नेतृत्व में वैज्ञानिको ने आर्यभट्ट नामक उपग्रह छोड़ा है और गणितज्ञ आर्यभट्ट के नाम को अमर कर दिया है।

••••••••

सतगुर सवां न को सगा, सोधी सई न दाति ।
हरि जी सवां न को हितू हरिजन सई न जाति ॥

× × ×

गुर सिकलीगर कीजिए, ग्यांन मसकला देइ ।
सबद छोलना छोलि कै, चित दरपन करि लेइ ॥

× × ×

सतगुर की महिमां अनंत, अनंत किया उपगार ।
लोचन अनंत उघारिया, अनंत दिखावन हार ॥

× × ×

बलिहारी गुर आपकी, द्यौहाडी सौ बार ।
जिन मानिख तै देवता, करत न लागी बार ॥

--कबीर



प्रो० सतीश धवन व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रो० रामाश्रय मिश्र, हिन्दी विभाग
गु० कां० विश्वविद्यालय, हरिद्वार !

भारत की वैज्ञानिक उपलब्धियों के इतिहास में १९ अप्रैल, १९७५ का दिन स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा । उसी दिन भारतीय उपग्रह आर्यभट ने लगभग ३० हजार किलोमीटर प्रति घण्टे की गति से पृथ्वी की परिक्रमा करना प्रारम्भ किया था । इस उपग्रह का आर्यभट नाम क्यों रखा गया ? यह भी बहुत महत्वपूर्ण घटना है ।

मास्को रवाना होने के ठीक पहले प्रो॰ सतीश धवन प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी से मिले और उन्हे इस तथ्य से अवगत कराया कि आर्यभट उपग्रह सम्बधी परियोजना अन्तिम चरण में है । उस समय प्रधान मन्त्री ने इस बात पर विशेष बल दिया कि भारतीय विज्ञान देश के विकास और भविष्य के लिए अत्यधिक महत्व वाली एक महान् घटना की दहलीज पर है । साथ ही श्रीमती इन्दिरा गांधी ने सुझाव दिया कि उपग्रह का नाम पूर्व के महान् ज्योतिर्विद और गणितज्ञ आर्यभट्ट के नाम पर रखा जाये । उनका जन्म १५ शताब्दी पहले पाटलिपुत्र जिसे आजकल पटना कहते हैं के गंगा-तटवर्ती ग्राम कुसुमपुर में हुआ था । उनकी जन्मस्थली प्राचीन पाटलिपुत्र से ज्यादा दूर नहीं थी । आर्यभट्ट ने तेइस वर्ष की आयु मे विज्ञान में असाधारण सफलता पायी । उन्होंने गणितीय विधि से इस बात को सिद्ध कर दिया कि पृथ्वी सूर्य के चतुर्दिक घूमती है और बीजगणित एवं त्रिकोणमिति सम्बन्धी उनकी कृतियाँ गौरव ग्रन्थ बन गयी हैं । आर्यभट्ट-पूर्व के कोपर्निकस-अपने समय से सदियों आगे थे । उनका कार्य-कलाप उन वैज्ञानिकों के लिए प्रेरणा दायक रहा है जिन्होंने उपग्रह पर काम किया है । प्रसंगवश इसका उल्लेख वांछनीय होगा कि अधिकांश वैज्ञानिकों की आयु उतनी ही है जितनी आर्यभट्ट की उस समय थी जब वह अपनी अमर कृतियाँ लिख रहे थे ।

ऐसे अपूर्व वैज्ञानिक की जन्म-दिवस शताब्दी को कार्य रूप मे परिणत कर जहां विश्व के सामने हमारे आधुनिक वैज्ञानिकों ने एक कीर्तिमान स्थापित किया है वहीं उस दिवगंत आर्यभट्ट की जन्म शताब्दी पर आर्यभट का प्रक्षेपण कर १९ अप्रैल, १९७५ एवं आर्यभट्ट को सदा-सदा के लिए अमर कर दिया है ।

सन् १९७० में स्वर्गीय डॉ० विक्रम साराभाई ने प्रो॰ यू० आर० राव की अध्यक्षता में त्रिवेन्द्रम में अन्तरिक्ष केन्द्र के अंग के रूप में

उपग्रह प्रणाली प्रभाग की स्थापना की थी। १० मई १९७२ को भारतीय अन्तरिक्ष अनुसन्धान संगठन और सोवियत अकादमी ऑफ साइंसेस के बीच आर्यभट के प्रक्षेपण के समझौते पर हस्ताक्षर हुए। उसी वर्ष सितम्बर मास में उपग्रह निर्माण कार्य शुरू करने के लिए पीन्या बंगलोर के इन्डस्ट्रियल क्षेत्र में कुटीरों को लिया गया तथा बंगलोर में प्रथम सिस्टम का रिव्यू हुआ। इसी वर्ष प्रो० सतीश धवन भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन के अध्यक्ष बने। सन् १९७३ में पहला रोहिणी राकेट छोड़ा गया और एक वर्ष बाद भारत और सोवियत संघ में मॉडल उपग्रह का परीक्षण किया गया। दो महीने बाद परीक्षण मॉडल को सोवियत संघ ले जाया गया तथा १९ अप्रैल, १९७५ को उपग्रह आर्यभट का प्रक्षेपण किया गया।

इस महान् कार्य के इतने शीघ्र सम्पन्न करने का श्रेय भारतीय अन्तरिक्ष शोध संगठन के अध्यक्ष प्रो० सतीश धवन एवं सोवियत संघ की विज्ञान अकादमी की अन्तर्ब्रह्माण्डीय परिषद के अध्यक्ष अकादमीशियन वी० एन० पेत्रोव को है।

भारत की साहसिक युवा पीढ़ी के निष्ठावान् वैज्ञानिक अत्यन्त सरल एवं आध्यात्मिक जीवन यापन करने वाले प्रो० सतीश धवन के कारण ही यह महान् उपलब्धि सम्भव हो सकी। ऐसे महान् वैज्ञानिक का जीवन परिचय लिखने की प्रबल कामना इस विशेषांक हेतु हुई। सौभाग्य या दुर्भाग्य से कुछ कह नहीं सकता, आपका जो चित्र मुझे प्राप्त हुआ उससे मैं आश्चर्य चकित ही रहा। खुला हुआ कॉलर वह भी नीली चैक्ड खिलाड़ियों की सामान्य आधी बांह की कमीज, भूरे रंग का स्वैटर, घड़ी में लगा हुआ लाल-काला आकर्षक फीता लहराते हुए बाल मानो कांती हुई चाँदी हों आदि का समन्वित दृश्य जहाँ सादा जीवन उच्च विचार की प्रतिमूर्ति बना हमारे सम्मुख खड़ा था वहीं मैं इस महान् वैज्ञानिक के चित्र को देखकर विस्मृत ही हो गया। क्योंकि मुझे तो यह आर्यभट का ही चित्र दृष्टिगोचर हो रहा था। हो भी कैसे न, आर्यभट में अस्थि पंजर का काम तो वैज्ञानिक कल-पुर्जे ही कर रहे हैं किन्तु आत्मा तो मानो प्रो० धवन की ही पृथ्वी की परिक्रमा कर रही है अन्यथा ६ मास की अवधि के लिए प्रक्षेपित आर्यभट दूना समय अर्थात् पूरा वर्ष व्यतीत करके भी गतिमान कैसे होता ?

प्रो० सतीश धवन का जन्म २५ सितम्बर, १९२० को श्रीनगर काश्मीर में हुआ। आपने राजकीय विद्यालय लुधियाना एवं लाहौर में शिक्षा ग्रहण करके सन् १९३८ में गणित एवं भौतिकी विषय लेकर बी० ए० की उपाधि प्राप्त की। स्नातकोत्तर अध्ययन पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ में किया। जहाँ से सन् १९४१ में अंग्रेजी साहित्य में एम०ए० की उपाधि प्राप्त की। सन् १९४४ में मैकेनिकल इञ्जीनियरिंग लेकर बी०एस- सी० आनर्स की उपाधि प्रथम श्रेणी एवं प्रथम स्थान में प्राप्त की।

कुछ समय हिन्दुस्तान एयर क्राफ्ट लि० के के हेवी बॉम्बर्स डिवीजन में कार्य किया। तत्पश्चात् वैमानकीय अभियांत्रिक (एयरोनाटिकल इञ्जीनियरिंग) की उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए भारत-सरकार से छात्रवृत्ति लेकर अमेरिका चले गये। इन्होंने सन् १९४६-४७ तक 'मिनेसोटा' विश्वविद्यालय में अध्ययन किया एवं एम०ए० की उपाधि प्राप्त की। सन् १९४७-५१, तक कैलीफोर्निया औद्योगिकी संस्थान (इन्स्टीटयूट ऑफ टेक्नालॉजी) में सहायक स्नातक अनुसंधित्सु (ग्रेजुएट रिसर्च असिस्टेण्ट) के रूप में

कार्य किया। जहाँ आपने सन् १९४९ में वायु-गतिकी (एयरो डायनेमिक्स) का विशेष अध्ययन करके वैमानिकीय अभियांत्रिक (एयरोनाटिकल इन्जीनियर्स) की उपाधि प्राप्त की। सन् १९५१ में वैमानिकी (एयरोनाटिक्स) एवं गणित में पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त की।

सन् १९५१ में अमेरिका से भारत लौटे तथा भारतीय विज्ञान संस्थान बंगलोर के वैमानकीय अभियांत्रिक विभाग में कार्य प्रारम्भ किया। जिससे आज तक आपका सम्बन्ध बना है। जहाँ आपने सन् १९५१-५२ तक वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी, सन् १९५२-५५ तक सहायक आचार्य (असिस्टैण्ट प्रोफेसर), सन् १९५५-६२ तक आचार्य एवं अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। सन् १९६२ से आप भारतीय विज्ञान संस्थान के निदेशक के रूप में कार्यभार सम्भाले हुए हैं। साथ ही वैमानकीय अभियांत्रिक विभाग के आचार्य पद पर भी कार्य कर रहे हैं। सन् १९७१-७२ में कैलीफोर्निया के औद्योगिकीय संस्थान (इन्स्टीट्यूट ऑफ टैक्नालॉजी) में विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में कार्य किया। उसके पश्चात् आप पुनः भारत आ गये और उपग्रह आर्यभट के प्रक्षेपण कार्य में दत्तचित्त हो गये। जिसका उल्लेख हम ऊपर कर आये हैं।

गत दशक से भारतवर्ष में वैमानिकी के विकास में आप लगे हुए हैं। आप ने अनेक शोध-निबन्ध (रिसर्च पेपर्स) लिखे हैं तथा तरल पदार्थ की यांत्रिकी और वैमानिकी विशेषकर तीव्र गति-वाली समस्याओं, सीमा सतह, ट्रान्सोनिक तथा सुपर सोनिक सुरंगों, क्षुब्धता, संक्रमण प्रपंच आदि की जानकारी से अवगत कराया है। आप रॉयल एरोनाटिकल सोसायटी एवं भारतीय विज्ञान अकादमी के फेलो तथा भारतीय वैमान-कीय सोसायटी के सदस्य हैं। इसके अतिरिक्त फिजिकल रिसर्च लैबोरेटरी मैनेजमेंट कौंसिल, इण्डियन नेशनल कमेटी फॉर स्पेस रिसर्च, दी एटामिक एनर्जी कमीशन, दी बोर्ड ऑफ पोस्ट ग्रेजुएट इन्जीनियरिंग एण्ड रिसर्च ऑफ ऑल इण्डिया कौंसिल फॉर टेक्निकल एजूकेशन तथा इण्डो-सोवियत ज्वाइण्ट कमेटी फॉर साइंटीफिक कवापरेशन के सदस्य भी हैं। सन् १९६८ में 'एक्सप्लोरेशन एण्ड पीस फुल यूजेज ऑफ आउटर स्पेस' पर होने वाली युनाइटेड नेशन की कान्फ्रेंस में भारतीय प्रतिनिधि मंडल के सदस्य थे।

भारत के राष्ट्रपति ने सन् १९६६ में पद्म-श्री एवं १९७१ में पद्म-भूषण की उपाधि देकर आपको ही नहीं अपितु भारत को गौरान्वित किया। इस महान् वैज्ञानिक की रुचि भी अनोखी है। जिसमें बच्चों के लिए खिलौने बनाना आपका मुख्य शौक है। इस प्रकार आपके व्यक्तित्व में साहित्य, विज्ञान एवं कला आदि का अपूर्व समन्वय दृष्टिगोचर होता है। भारत सरकार ने परिवार-नियोजन पर कुछ दिनों से विशेष बल दिया है किन्तु आपने अपने परिवार को बहुत पहले से ही सुनियोजित कर रखा है अर्थात् आपके दो पुत्रियाँ एवं एक पुत्र है। भारत के ही नहीं, विश्व के इस महान् वैज्ञानिक को मेरा शत-शत नमन है॥ अस्तु॥

गुरुकुल की यज्ञस्थली से—

दीक्षान्त समारोह पर कुलपति द्वारा सम्बोधन

बलभद्र कुमार

परम सम्माननीय महामहिम राज्यपाल महोदय ! माननीय कुलाधिपति जी ! विश्वविद्यालय शिक्षा एवं प्रबन्ध में सहभागी समस्त बन्धुजन ! संरक्षकगण ! देवियो ! सज्जनो ! छात्रजन ! एवं नवउपाधिप्राप्तकर्त्ता स्नातकवर्ग !

आज अपने बीच में महामहिम राज्यपाल महोदय को पाकर हम सब कुलवासी अत्यन्त उल्लास का अनुभव कर रहे हैं। हमारा निमन्त्रण पाकर, शासकीय कार्यों में अत्यन्त व्यस्त होते हुये भी आपने दीक्षान्त संस्कार में सम्मिलित होना तथा नव स्नातकों को आशीर्वाद देना स्वीकार किया, एतदर्थ विश्वविद्यालय के कुलपति होने के नाते मैं उनका अत्यन्त कृतज्ञ हूं।

इससे पूर्व कि मैं महामहिम राज्यपाल जी से दीक्षान्त भाषण के लिये प्रार्थना करूं संक्षेप में इस संस्था का परिचय एवं गत वर्ष की रिपोर्ट आपके सम्मुख प्रस्तुत करना चाहता हूं।

जब-जब देश का कोई भाग दुर्भिक्ष, जल विप्लव, महामारी या विदेशी आक्रमण आदि से आक्रान्त हुआ, तब-तब इस संस्था ने तन-मन-धन से अपना सहयोग अर्पित किया। भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के इतिहास में भी गुरुकुल की भूमिका उल्लेखनीय है। जब-जब देश की पुकार हुई तब-तब यहाँ के अधिकारियों, स्नातकों कर्मचारियों तथा छात्रों ने तत्संबंधी कार्यक्रमों में सक्रिय भाग लिया।

गुरुकुल काँगड़ी के शैक्षणिक स्तर को देखते हुए जून, १९६२ में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने इसे विश्वविद्यालय की मान्यता प्रदान की। गुरुकुल की विद्यालंकार, वेदालंकार, सिद्धान्तालंकार आयुर्वेदालंकार, वेदवाचस्पति तथा विद्यावाचस्पति उपाधियां पहले से ही विश्व विश्रुत थी। इनके अतिरिक्त अब हिन्दी, अंग्रेजी वेद, संस्कृत, दर्शन, मनोविज्ञान, प्राचीन भारतीय इतिहास और गणित जैसे प्रमुख विषय स्नातकोतर स्तर पर खोले गए और भौतिक विज्ञान, रसायन-शास्त्र, जीवविज्ञान, वनस्पतिशास्त्र तथा गणित को लेकर बी० एस-सी० कक्षाएं प्रारंभ की गई। शोध-कार्य को भी प्रोत्साहन दिया गया। वेद संस्कृत, हिन्दी और प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एव पुरातत्व मे उच्च स्तरीय मौलिक अनुसंधान करके अनेक छात्र पी-एच० डी० उपाधि प्राप्त कर चुके है। वेद महाविद्यालय, विज्ञान महाविद्यालय, आयुर्वेद महाविद्यालय, द्रव्य विज्ञान सग्रहालय तथा पुस्तकालय अपनी महत्तम उपलब्धियों एव उल्लेखनीय कृतियो के कारण इस जनपद मे अग्रगण्य है।

गुरुकुल शिक्षा पद्धति मे जो प्रधान मूलभावना निहित है वह गुरु-शिष्य का अन्तरंग सम्बन्ध है। ऋषियों की मर्यादा के अनुसार जब बालक गुरुकुल मे प्रवेश करता है तब उसका उपनयन संस्कार किया जाता है। उपनयन का अर्थ ही है-समीप लाना। अथर्ववेद के अनुसार आचार्य शिष्य का उपनयन संस्कार करके उसे इतना अधिक अपने निकट ले जाता है, मानो माता-पिता के समान उसे अपने गर्भ में ही स्थापित कर लेता है। इसके अतिरिक्त विविध विद्याओं का शिक्षण, ब्रह्मचर्य,

सादा जीवन और उच्च विचार, तपस्या, धनी-गरीब सबके साथ समान व्यवहार, जाति-पांति का भेद न होना, प्राचीन और नवीन विद्याओं का गुरुकुल शिक्षण–प्रणाली के आधार-भूत अंग है। इन्हीं आदर्शों पर यह गुरुकुल विश्वविद्यालय चलने का यत्न कर रहा है। कभी हम लड़खड़ाते भी हैं, गिरते-पड़ते हे, तो भी हमारी आगे बढ़ने की दिशा उन्ही आदर्शों के अनुसार निर्धारित है और उन्ही आदर्शों की पूर्ति के लिए हम प्रभु का, देश के कर्णधारों का और जनता-जनार्दन का आशीर्वाद चाहते है।

इस विश्वविद्यालय की नीव है हमारा विद्यालय विभाग। इसमें हम छ. वर्ष से दस वर्ष की आयु के बालकों को प्रविष्ट करते हैं। तथा सभी प्रान्तों से और कभी-कभी विदेशों से भी बालक आश्रम जीवन यापन तथा शिक्षा ग्रहण करने के लिए आते हैं। शारीरिक व्यायाम, खेलकूद स्काउटिंग आदि की शिक्षा ग्रहण करते है।

यहां का वेद महाविद्यालय भी अपनी एक पृथक् विशिष्टता रखता है। इस महाविद्यालय में वेदालंकार परीक्षा मे वेद,–वेदांग, संस्कृत साहित्य तथा भारतीत दर्शनशास्त्र की अनिवार्य उच्च शिक्षा के साथ-साथ अंग्रेजी भाषा, हिन्दी साहित्य, मनोविज्ञान, इतिहास आदि के शिक्षण का प्रबन्ध है। इस प्रकार प्राचीन और नवीन का सुन्दर समन्वय है। इसके अतिरिक्त इस महाविद्यालय मे वेद तथा संस्कृत विषयों मे एम० ए० तथा पी-एच०डी० का भी प्रबन्ध है।

कला महाविद्यालय मे विद्यालंकार परीक्षा में संस्कृत तथा प्राचीन भारतीय संस्कृति का सामान्य ज्ञान अनिवार्य रूप से कराया जाता है। इसके अतिरिक्त छात्र कोई तीन विषय अपनी इच्छानुसार चुनते हैं। आगे विभिन्न विषयों में एम० ए० तथा पी-एच० डी० की भी व्यवस्था है। विज्ञान का क्रियात्मक शिक्षण देने के लिए हमारे पास सुसज्जित एवं सुव्यवस्थित प्रयोग-शालाएं विद्यमान हैं।

आयुर्वेद महाविद्यालय में पांच वर्ष का पाठ्यक्रम है, जिसमें आयुर्वेदिक तथा एलोपैथिक दोनों चिकित्सा प्रणालियों का ज्ञान कराया जाता है। छात्रों को चिकित्सा का क्रियात्मक ज्ञान कराने के लिए तथा समीपस्थ ग्रामवासियों की सेवा के लिए रोगी, सुश्रुषा–गृह भी विद्यमान है। जिनमें लगभग १०० रोगियों के लिए शैयाएं है। यहाँ एक प्राचीन संग्रहालय भी है जिसकी स्थापना १९५० ई० मे की गई थी। इस संग्रहालय में प्राचीनतम सोने, चाँदी, ताबे, अष्टधातु आदि के सिक्के, पाण्डुलिपियाँ, मूर्तियां, मृणमूर्तियाँ, पुरातन चित्रकला आदि के नमूने विद्यमान हैं।

इस संस्था में एक विशाल पुस्तकालय है जिसमे विभिन्न विषयों की लगभग ९२,००० पुस्तकें हैं। पुस्तकालय में इस विश्वविद्यालय के छात्रों के अतिरिक्त बाहर से भी शोधार्थी आते हैं जो यहां के संदर्भ ग्रंथो का लाभ उठाते है। मे इस बात का भी उल्लेख करना चाहूंगा कि गुरुकुल पुस्तकालय मे हम आर्य समाज के सम्पूर्ण साहित्य का संग्रह करने जा रहे हैं, ताकि भविष्य में यह सामग्री शोधार्थियों को आसानी से सुलभ हो सके।

इसके अतिरिक्त हमारे पुस्तकालयध्यक्ष श्री जबरसिंह सैंगर के नेतृत्व मे गुरुकुल के समीपस्थ ग्रामीण क्षेत्र में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय पुस्तकालय की १० शाखाएं खोलने का भी

निर्णय लिया गया है, ताकि ग्रामीण जनता को उनके लिए उपयोगी साहित्य उपलब्ध कराया जा सके। यह योजना राजा राममोहन राय फाउण्डेशन के सहयोग से आरंभ की जा रही है।

उन्हीं ग्रामों में मेरे सहयोगी डा० अनन्तानंद के नेतृत्व में आयुर्वेद चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने की भी योजना है-।

श्रीमन् !

अब में आपके समक्ष इस संस्था ने गतवर्ष जो कार्य किया है उसका संक्षिप्त ब्यौरा प्रस्तुत करना चाहूंगा। सबसे पहले मैं श्रद्धानन्द शोध संस्थान का जिक्र करूंगा। आर्ष साहित्य में शोध की आवश्यकता को दृष्टिगोचर रखते हुए इस संस्थान की स्थापना की गई है। इसके निर्देशक मेरे सुयोग्य अग्रज डा० सत्यकेतु विद्यालंकार हैं।

जैसा कि विद्वद्जनों को विदित ही है कि प्रो० गुरुदत्त ने पिछली शताब्दी में वैदिक मैगजीन का का प्रकाशन प्रारम्भ किया था। उनके देहान्त के बाद यह बन्द हो गया था। पुनः प्रो० रामदेव ने इसका प्रकाशन गुरुकुल से १९०७ ई० में प्रारंभ किया। एवं यह पत्रिका १९३६ ई० तक सफलता पूर्वक प्रकाशित होती रही। इस पत्रिका के माध्यम से टालस्टाय एवं रोमियाँ रोला का राम देव जी से पत्र व्यवहार हुआ। अब हमने वैदिक पाथ, के नाम से, वैदिक मैगजीन को पुनर्जीवित किया है। यह पत्रिका अंग्रेजी में है और इसके माध्यम से भारत के अहिन्दी भाषी प्रदेशों एवं अंग्रेजी भाषा-भाषी जगत् में भारतीय संस्कृति के प्रसार को बढ़ावा मिलेगा। इसके संपादन का भार भी डा० सत्यकेतु ने संभाला है। हम उनके बहुत आभारी हैं।

इसी प्रकार इन्हीं दिनों, शोध भारती, के नये इस्यू का भी प्रकाशन होने जा रहा है। इसके अतिरिक्त यहाँ से गुरुकुल पत्रिका, प्रकाशित होती है। वैसे तो यह पुरानी पत्रिका है पर कई कारणों से उसका नियम पूर्वक प्रकाशन नहीं हो पा रहा था अब ऐसी व्यवस्था कर दी गई है कि उसका नियम पूर्वक प्रकाशन हो। इसके मुख्य संपादक पहले पं० भगवद्दत्त थे। उनके अवकाश ग्रहण के बाद अब श्री रामाश्रय ने यह भार संभाला है। इसी प्रकार यहाँ के अध्यापक गण की देख-रेख में विद्यालय के बच्चों ने ध्रुव, और विश्वविद्यालय के छात्रों ने प्रह्लाद पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ करने का निश्चय किया है। प्रह्लाद पत्रिका में इस प्रकार की जानकारी उपलब्ध की जायगी जिससे कि छात्रों को रोजगार ढूढ़ने में सुविधा हो, बच्चों के ये दोनों प्रोजेक्ट श्लाघनीय हैं।

जैसा कि मैं ऊपर कह चुका हूँ गुरुकुल शब्द ही एक पारिवारिक भावना का प्रतीक है। इस भावना को सुदृढ़ करने हेतु हमने यहाँ बारह परिवार बनाये हैं। वर्ष में बारह मास होते हैं। अतः जन्म के मास के अनुसार हमने छात्रों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों को बारह परिवारों में संगठित किया है। एवं इन परिवारों के नाम आधुनिक भारत के निर्माता – नेताओं के नामों से जोड़ दिए हैं। जैसे– नेहरू परिवार, श्रद्धानन्द परिवार, लाजपत परिवार, दयानन्द परिवार, भगतसिंह परिवार, आदि। उसी के अनुसार यह निश्चय किया है कि गुरुकुल पत्रिका के भी उन्हीं नायकों के नाम पर बारह अंक निकाले जायें अभी तक नेहरू अंक (नवम्बर १९७५) श्रद्धानन्द अंक (दिसम्बर १९७५), लाजपतराय अंक (जनवरी १९७६), दयानन्द अंक (फरवरी

१९७६), एवं भगतसिंह अंक (मार्च १९७६) निकल चुके हैं। इसके बाद आर्य भट्ट अंक (अप्रैल), रवीन्द्र अंक (मई) तिलक अंक (जुलाई) अरविन्द अंक (अगस्त), विनोबा अंक (सितम्बर) गाँधी अंक (अक्टूबर) निकालने की योजना है। तात्पर्य यह है कि प्रत्येक कुलवासी इन महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा प्राप्त करता हुआ अपने कर्तव्य पथ पर अग्रसर हो।

श्रीमती इन्दिरा गाँधी के २० सूत्रीय कार्यक्रम को क्रियान्वित करने के सम्बन्ध मे यहाँ के आचार्यों ने फरवरी में एक गोष्ठी की। उसकी रिपोर्ट गुरुकुल पत्रिका मे छप गई है। इस प्रोग्राम के अन्तर्गत विश्वविद्यालय मे बुक बैंक की व्यवस्था की जा रही है, ताकि छात्रों को पाठ्य पुस्तकें आसानी से सुलभ हो सके।

छात्रों के आश्रमों अर्थात् होस्टलों मे निवास एव भोजनादि की व्यवस्था के लिये हमने आश्रमाध्यक्षों को नियुक्त किया है। उनसे अपेक्षित है कि वे आश्रम में ही रहे और छात्रों की आवश्यकताओं, दिनचर्या आदि की समुचित देखरेख करें। श्री क्रान्ति कृष्ण मुख्य आश्रमाध्यक्ष है।

छात्रों के स्वास्थ्य को बढ़ावा देने हेतु हम यहां एक शारीरिक प्रशिक्षण विभाग एव योग संस्थान स्थापित करना चाहते हैं। विश्वविद्यालय मे घुड़सवारी और संगीत की कक्षाएं प्रारम्भ करने की भी योजना है। इसके साथ-साथ यहाँ स्टेडियम, बोट क्लब आदि खोलने का भी प्रस्ताव है लेकिन ये सभी योजनायें धनाभाव के कारण रुकी हुई है।

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि हमारे एक छात्र ब्र० देवकेतु ने कार रोकने का अभ्यास किया है तथा अन्य छात्रों ने यौगिक आसनों में दिलचस्पी दिखलाई है। इनके चित्र आपने गुरुकुल पत्रिका के दयानन्द अंक में देखे होंगे। ब्र० देवकेतु को १९७६ के 'अभिमन्यु श्री' सम्मान से सुशोभित किया गया है। इसी कार्यक्रम के अन्तर्गत राजेन्द्र कुमार को उत्तरकाशी मे हो रहे पर्वतारोहण शिविर में भेजा है। आशा है कि वह वापसी पर यहां के छात्रों को इस दिशा में प्रेरणा दे पायेगें।

गुरुकुल की एन० सी० सी० यूनिट ने प्रो० वीरेन्द्र के नेतृत्व मे सराहनीय सफलता प्राप्त की है। आर्य समाज शताब्दी जलूस मे उनके प्रदर्शन की सब ओर से सराहना की गई थी।

गुरुकुल के भावी विकास के लिये तथा वर्तमान दशा को सुधारने के लिये माननीय कुलाधिपति महोदय ने पिछले मास एक उच्चस्तरीय समिति का गठन किया है। इसके अध्यक्ष पंजाब विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलपति पद्मभूषण डा० सूरजभान हैं। इनके अन्य सदस्य श्री सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, भूतपूर्व कुलपति गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, पं० अमरनाथ विद्यालंकार, संसद सदस्य, श्री भक्तदर्शन जी, कुलपति, कानपुर विश्वविद्यालय, श्री मसूद हुसैन खां, कुलपति, जामियां मिलिया डा० हरवंशलाल शर्मा, निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, श्री अनिल बोर्डिया सह-सचिव शिक्षा मंत्रालय श्री आर० के० छाबड़ा, सचिव, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग हैं। इसकी पहली मीटिंग ६ अप्रैल, ७६ को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के कक्ष में हुई।

जनरल बहस के बाद कमेटी ने निम्नलिखित

तीन सब कमेटियां नियुक्त की हैं। वह अपने-अपने विषयों पर गहराई से विचार करके अपनी रिपोर्ट बड़ी कमेटी के सम्मुख विचारार्थ प्रस्तुत करेंगी।

१—विधान उप-समिति
२—शिक्षा उप-समिति
३—वित्तीय उप-समिति

इनके अध्यक्ष क्रमशः डा० सूरजभान, प० सत्यव्रत तथा पं० अमरनाथ हैं। इनको अन्य सदस्य सहवरण करने के अधिकार दे दिये गये हैं।

मैं अपनी और गुरुकुल की ओर से इन महानुभावों के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ कि उन्होंने गुरुकुल के हित में अपना अमूल्य समय देना स्वीकार किया है।

पिछले दिनों मुझे आचार्य विनोबा भावे द्वारा बुलाये गये आचार्य सम्मेलन में भाग लेने का अवसर मिला। मेरी प्रार्थना पर हमारी संस्था के आचार्य गण एवं विद्यार्थी गण के नाम आचार्य ने जो सदेश दिया है वह गुरुकुल पत्रिका के दयानन्द अंक में प्रकाशित हुआ है। वह है–

शान्तं, शिवं, अद्वैतम्।

मैं इसकी यहाँ व्याख्या करके आपका अमूल्य समय नहीं लेना चाहता। इतना जरूर कहूँगा कि हमें इस भावना को कार्य रूप में लाना है। इसी उद्देश्य से हमने गत वसन्त पचमी को अपने यहाँ भी आचार्य कुल की स्थापना की है। यह समारोह गुरुकुल की पुण्य भूमि स्वामी धर्मानन्द सरस्वती के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। सत्रह अध्यापकों ने आचार्य कुल के संकल्प लिये। श्री हरगोपाल सिंह इसके संयोजक हैं।

गत जनवरी में जो कुलपति सम्मेलन हुआ था उसमें शिक्षा के क्षेत्र में दो सुधार विशेषकर उभर कर सामने आये। एक था दस+दो+तीन की शिक्षा योजना को अपनाने के बारे में दूसरा था परीक्षाफल में लेटर ग्रेडिंग सिस्टम लागू करने के बारे में। इन सुझावों को गुरुकुल में कब कैसे अपनाया जाय इसके बारे में हमारी शिक्षा पटल की पिछली बैठक में चर्चा हुई थी। निर्णय यह हुआ था हम अपने अध्यापकों की टीमें इन सुधारों को किया पद्धति को समझने के लिए पिलानी, रुड़की तथा अन्य विश्वविद्यालयों में भेजें। साथ मे जैसा कि श्रीमन् आप द्वारा बुलाये गये उत्तर प्रदेश के कुलपतियों के सम्मेलन में वर्कशाप होल्ड करने का निर्णय हुआ उसमें भी हम अपने अध्यापकों को भेजने का इरादा रखते हैं।

बिला शक आज सभी स्वीकार करते हैं कि सामान्य शिक्षा को जीवनोन्मुख बनाये बिना देश का कल्याण नहीं है। साथ में शिक्षा के क्षेत्र को व्यापक करने के बारे में भी अब दो राय नहीं है। हर सम्मेलन मे इटर डिसीप्लिनैरी शिक्षा पद्धति की चर्चा होती है। यह बात शायद कइयों के लिए नई होगी कि स्वामी दयानन्द ने तो आज से १०० वर्ष पहले इन्टर डिसिप्लिनरी शिक्षा पद्धति लागू करने पर जोर दिया था। सत्यार्थ-प्रकाश मे शिक्षा के जिस पाठ्यक्रम का जिक्र किया गया है उसके अनुसार एक शिक्षित युवक के लिए जहाँ यम-नियम के पालन एवं वेदाध्ययन का प्रावधान है, वहाँ ४ वर्ष तक आयुर्वेद तथा दो वर्ष तक धनुर्वेद अर्थात्- कवायद, आदि सीखने का भी आदेश है। इसके बाद गान विद्या सीखने का कार्यक्रम है। साथ ही दो वर्ष तक ज्योतिष शास्त्र, सूर्य सिद्धान्त बीजगणित, अंक, भूगोल, खगोल, आदि विद्याओं को सीखने का प्रावधान है।

तत्पाश्चात् हस्तक्रिया, यन्त्रकला भी सिखलावें। स्वामी जी कहते हैं कि ऐसा प्रयत्न पढ़ने और पढ़ाने वाले करें जिससे बीस व इक्कीस वर्ष के भीतर समग्र विद्या प्राप्त कर, मनुष्य कृत-कृत्य हो, एव सदा आनन्दमय रहे।

कई हलकों में आरोप लगाया जाता है कि आर्यसमाज एक रूढ़िवादी एव ज्ञान-विज्ञान विरोधी संस्था है। पर यदि कोई भी निष्पक्ष व्यक्ति आर्य समाज के नियमों पर दृष्टिपात करे तो उसे मानना होगा कि आर्य समाज एक प्रगतिशील एवं क्रान्तिकारी संस्था है। जो प्रत्येक नागरिक की आध्यात्मिक, मानसिक और शारीरिक उन्नति चाहती है। आर्य समाज का लक्ष्य धर्म, जाति, देश से उठकर समानता पर आधारित शोषण रहित विश्व समाज का निर्माण करना है। आर्य समाज के पिछले १०० वर्षों के इतिहास पर किसको गर्व न होगा? गुरुकुल की स्थापना भी इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति के लिए काम करने वाले व्रतधारी ब्रह्मचारी पैदा करने हेतु की गई थी। जैसा कि मैं ऊपर कह चुका हूं गुरुकुल से निकले हुए ब्रह्मचारियों ने देश की विभिन्न प्रगतिशील प्रवृत्तियो मे भाग लेकर जहां देश की प्रगति एव कल्याण में अपना योगदान दिया है वहा गुरुकुल का नाम भी उज्ज्वल किया है। आज के सुअवसर पर हम अपने उन लब्धप्रतिष्ठ अग्रजों को पुनः याद करते है और उनके चरणचिह्नों पर निर्भय होकर चलने का संकल्प लेते हैं।

जवाहरलाल नेहरू के शब्दो में—

"विश्वविद्यालय का उद्देश्य मानवता, सहिष्णुता, विवेक, नये-नये विचार और सत्य की खोज एवं मानव जाति को उच्चतर लक्ष्य की और अग्रसर करना है। जिस राष्ट्र के विश्वविद्यालय अपने कर्त्तव्य का सही अर्थ में पालन करते है वह राष्ट्र धन्य है और उसकी प्रजा का कल्याण सुनिश्चित है। परन्तु यदि विद्या के ये मन्दिर संकीर्णता और तुच्छ लक्ष्यों के गढ़ बन जाये तो ऐसे राष्ट्र और जनपद उन्नति और विकास की ओर अग्रसर नही हो सकते।"

मुझे आशा ही नही पूर्ण विश्वास है कि गुरुकुल के गुरूजन इन लक्ष्यों को सामने रखकर उन्नति के पथ पर अग्रसर होंगे। क्योंकि अन्ततोगत्वा किसी भी विश्वविद्यालय का स्तर उसके अध्यापक वर्ग के स्तर मे ऊंचा नही उठ सकता।

श्रीमन्।

मैं एक बार फिर यहा उपस्थित विद्वजनों का अभिनन्दन करता हू। मैं विद्वान गुरुजनों को प्रणाम करता हूं। मै प्रशासको के कार्यकौशल और कर्त्तव्यनिष्ठा की प्रशसा करता हू, शोधार्थियो एवं उनके विद्वान निर्देशको की सत्यानुसधान के लिए किये गये सतत् परिश्रम की सराहना करता हू एव संरक्षक-सभा के पदधिकारियो का भी कृतज्ञ हूं जिन्होंने समय समय पर सुझाव देकर हमारा मार्ग-दर्शन किया है, और प्रार्थना करता हू कि भगवान हमको सद्बुद्धि दे ताकि हम स्वामी श्रद्धानन्द की वसीयत के अनुसार गुरुकुल की रक्षा करने मे सफल हों।

श्रीमन्,

राष्ट्रीय विचारधारा से ओतप्रोत इस विश्वविद्यालय को विश्व कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर, पं० मदन मोहन मालवीय, महात्मा गांधी, मोतीलाल नेहरू, बाबू राजेन्द्र प्रसाद, सरदार पटेल, डा० राधाकृष्णन, जवाहरलाल नेहरू, श्रीमती इन्दिरा

गांधी का आशीर्वाद प्राप्त होता रहा है। इसी शृंखला में आज आपने इस तपोभूमि में पदार्पण कर हमारा उत्साह बढाया है। इसके लिये हम आपके अत्यन्त आभारी हैं तथा इस संस्था के उपर्युक्त संक्षिप्त परिचय के साथ इस श्रद्धानन्द नगरी में हम आपका हार्दिक स्वागत करते है। आप का सारा जीवन देश सेवा में व्यतीत हुआ है तथा इस समय आपने हमारे उत्तर-प्रदेश का नेतृत्व संभाला हुआ है और इसे सब सुख-सुविधाओं से समन्वित एवं उन्नत करने के लिये आज सर्वान्त-मना प्रयत्नशील हैं। अब मेरी आपसे प्रार्थना है कि नव स्नातकों को आशीष प्रदान करें और हमारा मार्ग-निर्देशन करें।

टिप्पणी.–"दीक्षान्त समारोह पर कुलपति द्वारा सम्बोधन–बलभद्र कुमार, गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार–१४ अप्रैल, १९७६" भाषण के पृष्ठ ९ पंक्ति २४ पर छपे 'अग्रेजो' का 'अग्रजो पढें।

—सम्पादक

हमारे गुर बडे भ्रिंगी ।
आनि कीटक करत भ्रिंग सो आपतं रंगी ।।
पाइ औरै पख औरै और रग रंगी ।
जाति पाति न लखै कोई भगत भौ भंगी ।।१।।
नदी नाला मिले गगा कहावै गंगी ।
समांनी दरियाव दरिया पार ना लंघी ।।२।।
चलत मनसा अचल कीन्ही माहि मन पगी ।
तत्त में निहतत्त दरसा सग मैं सगी ।।३।।
बध तें निर्बध कीया तोरि सब तंगी ।
कहै कबीर अगम किया गम राम रंग रंगी ।।४।।

कबीर

गुरुकुल समाचार

श्री महावीर 'नीर' विद्यालंकार

ऋतु–रंग

अप्रैल मास के मध्य तक का ऋतु-चक्र इस प्रकार रहा । दिन के तापमान मे उष्णता बढ चली । प्रात और साय की हल्की सी ठण्ड रह गई । हवा के झोको से वृक्षो की डालिया झूमने लगी । नये पत्तों का उद्भव एव पके पत्तो का पतन साथ-साथ चलता रहा । आधी व तूफान का भय बना रहा । शीतलपेय की लालसा बढ चली । विद्युत पंखे घूमने लगे । ब्रह्मचारियो ने नहर-स्नान का आनन्द उठाना प्रारम्भ कर दिया । शहतूत पक गए । कटहल वृक्ष फूल उठे । नन्ही-नन्ही अम्बियो का अभाव रहा । परीक्षा की तैयारी म लगे छात्रो के झुण्ड इतस्तत दिखाई देने लगे । मच्छरो व मक्खियो का प्रभाव बढ चला ।

विद्यालय–विभाग

विद्यालय-विभाग मे आश्रम की सुव्यवस्था एव अध्ययन व अध्यापन का कार्य सुचारु रुपेण चलता रहा ।

मुख्याध्यापक-की नियुक्ति— विद्यालय विभाग मे १० अप्रैल से श्री ओमप्रकाश जी राजपाल ने मुख्याध्यापक पद का कार्यभार सम्भाल लिया है । आप पहले भी कई बार गुरुकुल आ चुके हैं । प्रथम बार १९३१ तथा १९३३ मे एव तृतीय बार १९४० म एक आर्य युवक के रूप मे गुरुकुल आये थे । आपको शिक्षा क्षेत्र का लगभग २२ वर्ष का अनुभव है । आप अभी पिछले दिनो सेना से सेवा मुक्त हुए हैं । आप एक सहृदय सुयोग्य तथा अनुशासन प्रिय व्यक्ति है ।" आशा है हमारे नये मुख्याध्यापक जी गुरुकुलीय परम्पराओ की आधार शिला पर विद्यालय को उन्नति, अनुशासन और गतिशीलता की की ओर ले जाने का प्रयास करेगे । सहयोगी अध्यापको एव अधिष्ठाताओ की शुभ कामनाए एव पूर्ण सहयोग आपके साथ है ।

टेकचन्द नागिया आश्रम में गति शीलता

डा० जसवीरसिंह जी (आश्रम अधि०) के अनुसार आयुर्वेदिक टी० एन० छात्रावास का वातावरण शांत और सौम्य है । सारे आश्रम में सफेदी कर दी गई है । समस्त आश्रमवासी छात्र नियमित रूप से सध्या-हवन मे भाग लेते है । सभी छात्र अपने अध्ययन मे लगे है । ज्ञात हुआ है कि आयुर्वेद महाविद्यालय मे वार्षिक परीक्षाए निकट भविष्य मे प्रारम्भ होने वाली है ।

श्री पं० भगवद्दत्त जी का अभिनन्दन

परमादरणीय पं० भगवद्दत्त जी वेदालंकार का आर्य समाज गुरुकुल काँगड़ी के प्रधान पद से निवर्तमान होने पर आर्यसमाज के समस्त सदस्यों ने ३।८ ७६ के एक भव्य-समारोह में आर्य समाज मन्दिर में अत्यन्त शालीनता पूर्ण एवं सहृदयतापूर्ण अभिनन्दन किया । समारोह की अध्यक्षता मान्य कुलपति श्रीबलभद्रकुमार जी ने की । समारोह का प्रारम्भ ब्र० गणेशप्रसाद विद्यालंकार के ईश्वर-स्तुति परक भजन से हुआ । आर्यसमाज के मन्त्री श्री श्रीचन्द जी तथा कार्यालय के श्री वाचस्पति जी ने पण्डित जी को माला पहना कर सम्मान दिया । तदनन्तर पं० जी की सेवाओं के लिए उन्हें एक प्रशस्ति-पत्र भेंट किया गया । डा० वासुदेव जी चैतन्य, डा० निगम जी, प्रो भारत भूषण जी, श्री शिवचरण जी ने समान रूप से पण्डित जी के जीवन के विभिन्न कार्यों की सराहना की : श्री सुरेशचन्द्र जी (प्रिन्सिपल वि० महा०) ने आपको अजात शत्रु बताया । डा० अनन्तानन्द जी आयुर्वेदालंकार (प्रिन्सि० आयुर्वेद महा०) ने पं० जी को वेदों का गहन अध्येता, तथा गुरुकुल की विशेष विभूति बतायी । डा० गंगाराम जी (कुलसचिव) ने कहा कि--आपकी 'स्वप्न विज्ञान' एक मौलिक कृति है । जिसका अंग्रेजी अनुवाद हो तो पश्चात्य विद्वानों में इसका सम्मान होगा । आचार्य डा० रामनाथ जी वेदालंकार ने कहा कि-- पंण्डित जी जैसी विभूति पर गुरुकुल गर्व कर सकता है । वैदिक-संस्कृत में गति होने के साथ आपकी लौकिक संस्कृत में अबाध गति है । मान्य कुलपति जी ने कहा--मेरी पण्डित जी के प्रति हार्दिक स्नेह और श्रद्धा है । मैं कभी यह नहीं सोच सकता कि पण्डित जी कभी गुरुकुल से अलग हो सकते हैं ।

अन्त में अभिनन्दन के प्रत्युत्तर में पण्डित जी ने सबका हार्दिक आभार प्रकट करते हुए कहा कि मेरे जीवन में त्रुटियाँ भी हैं । परमात्मा ने मुझे वेद पढने की ओर प्रेरित किया है । अध्यात्म में मेरी सदा रुचि रही है । कुल माता सदा मेरे साथ है ।" शान्ति पाठ और मिष्ठान वितरण के पश्चात् समारोह समाप्त हुआ ।

कुलपति जी का मौन-यज्ञ

पिछले दिनों अकस्मात् गुरुकुलीय सागर में विक्षोभ सा आ गया । कुलपति जी ने उस विक्षुब्ध सागर में शांति-यान चला कर कुछ स्थैर्य लाने की कोशिश की । लगभग ४ दिन के मौन एवं अनशन यज्ञ के द्वारा मान्य कुलपति श्री बलभद्रकुमार जी ने, गुरुकुल से हिंसा, प्रमाद, अनुशासन हीनता तथा भय इन चार दुष्प्रवृत्तियों को दूर करने के लिए अपनी अन्तर्मुखी सात्विक आहुतियां डाली । जिससे परस्पर के मनोमालिन्य में स्नेह और सहयोग के अंकुरों का प्रस्फुटन दृष्टिगत हुआ ।

गुरुकुल के ७६ वें वार्षिकोत्सव की कुछ झांकियां

गुरुकुल का ७६ वां वार्षिकोत्सव बड़े हर्षोल्लास पूर्ण वातावरण के साथ समाप्त हो गया । दूर-दूर से ज्ञान-पिपासु अपनी श्रद्धा-भक्ति का भाव लेकर गुरुकुल पधारे तथा यहां ४ दिन ज्ञान

गंगा में स्नानकर अपने-अपने घरों को लौट गये । गुरुकुल उन सभी महानुभावों का धन्यवाद करता है तथा सदा ही प्रेम भाव की आशा करता है। यदि किसी को भोजन व निवास आदि का कोई कष्ट हुआ हो तो वह उसकी क्षमा चाहता हुआ भविष्य में आपके सहयोग की पुनीत एवं पूर्ण आशा करता है । समस्त जनता के सहयोग से उत्सव का जो कार्यक्रम-चला उसकी संक्षिप्त झलक हम यहाँ दे रहे है--

११ अप्रैलः—प्रातः संध्या, प्रार्थना तथा यज्ञ आदि के पश्चात् स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने कुलपताका आरोहण किया । तदन्तर खेमचन्द जी और श्यामसिंह हितकर के मनोहर भजन हुए । स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का वेद-विषय को लेकर सदुपदेश हुआ । उन्हों ने कहा कि– "वेदों में जो धर्म है वह सब मतों से उत्तम है। स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती (पं० धर्मदेव जी) ने कहा कि अब आर्यसमाज के नेताओं को प्रचार की अपेक्षा आचार पर बल देना चाहिए ।

आयुर्वेद सम्मेलनः—मध्याह्न में आयुर्वेद सम्मेलन हुआ। अध्यक्षता भूतपूर्व कृषि राज्य मन्त्री प्रो० शेरसिंह जी ने की । श्री ओमानन्द जी महाराज ने उद्घाटन भाषण में आयुर्वेदिक औषधियों के महत्त्व को प्रदर्शित करते हुए अनेक अनुभूत योग भी बताये । स्वामी सर्वानन्द जी, श्री योगेन्द्रपाल जी शास्त्री, कु० ज्योत्स्ना एम० ए०, डा० अनन्तानन्द जी आदि अनेक वक्ताओं ने आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति के गुणों का बखान किया । सम्मेलन का संचालन पंचपुरी के प्रसिद्ध वैद्य एवं गुरुकुल आयुर्वेद के उपाध्याय, रामनाथ जी ने बड़ी कुशलता पूर्वक किया ।

रात्रि में स्वामी ओमानन्द जी महाराज का ओजस्वी व्याख्यान हुआ । तदन्तर सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री श्री ओमप्रकाश जी पुरुषार्थी ने वैदिक समाजवादी विचार धारा का सुन्दर निरूपण किया ।

१२ अप्रैल–दूसरे दिन प्रातः संध्या, प्रार्थना तथा यज्ञ के पश्चात् श्री वीरेन्द्र जी 'वीर' भजन मण्डली के भजनोपदेश हुये । स्वामी रामेश्वरानन्द जी का धार्मिक प्रवचन हुआ । तदन्तर चित्तौड गढ गुरुकुल के आचार्य तथा गु० कां० के स्नातक स्वामी व्रतानन्द जी महाराज का 'ओ३म्' पर सारगर्भित और आनन्दायी प्रवचन आ ।

आर्य सम्मेलनः––मध्यान्ह में वीरेन्द्र जी 'वीर' शोभाराम जी प्रेमी, खेमसिंह आदि के मनोहर भजनों के पश्चात् आर्य सम्मेलन का कार्यक्रम चला । अध्यक्षता आचार्य पृथ्वीसिंह जी आजाद ने की। सम्मेलन का उद्घाटन–लाला रामगोपाल शालवाले ने किया । संचालन श्री जयदेव वेदालंकार ने किया । श्री सच्चिदानन्द जी शास्त्री, आचार्य प्रियव्रत जी विद्यामार्तण्ड, श्री वीरेन्द्र जी (मन्त्री आ० प्र० स० प०) श्रीमती ईश्वरी देवी आदि वक्ताओं ने महत्त्वपूर्ण विचार प्रकट किए ।

रात्रि में–पन्नालाल जी पीयूष के संगीत के पश्चात् श्री ओमानन्द जी महाराज एवं पं० क्षितीश जी वेदालंकार के विचारोत्तेजक भाषण हुए । स्वामी ओमानन्द जी ने जहाँ आर्यसमाज की गति-विधियों पर मार्मिक उद्गार प्रकट किए, वहां श्री क्षितीश जी ने अपने विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान में बाल्मीकीय रामायण के उद्धरण देकर पुष्ट किया कि 'राम' कपोल कल्पित पात्र नहीं है, अपितु

वह एक ऐतिहासिक पुरुष-रत्न है। भारतीय संस्कृति की जड़ों को कुरेदने वाले व्यक्तियों को उन्होंने पूर्ण रूप में चुनौति दी।

१३ अप्रैल—तीसरे दिन संध्याप्रार्थना व यज्ञ के पश्चात् वीरेन्द्र जी वीर मण्डली के भजन हुए तदनन्तर आचार्य डा० रामनाथ जी वेदालंकार की अध्यक्षता में नवीन ब्रह्मचारियों का वेदारम्भ संस्कार हुआ। स्वामी व्रतानन्द जी महाराज ने धर्मोपदेश किया।

शिक्षा सम्मेलन—मध्यान्ह में बलबीर सिंह जी बेधड़क के भजनोपदेश के पश्चात् शिक्षा सम्मेलन की कार्यवाही प्रारम्भ हुई। गुरुकुल के वरिष्ठ हिन्दी प्राध्यापक डा० विष्णुदत्त जी राकेश ने सम्मेलन का संचालन किया अध्यक्षता-भारतीय शिक्षा शास्त्री डा० सूरजभानसिंह जी ने की। उद्घाटन भाषण प्रसिद्ध वैज्ञानिक विद्वान् स्वामी सत्यप्रकाशानन्द जी महाराज ने किया। सर्व श्री डा० सत्यकेतु जी विद्यालंकार, सुरेशचन्द्रजी (प्रिन्सिपल वि० विद्यालय), पं० कपिलदेव जी शास्त्री आदि प्रमुखवक्ताओं ने शिक्षा सम्बन्धी विविध परिचर्चायें प्रस्तुत करते हुए आधुनिक परीक्षा प्रणाली का भी विवेचन किया। अध्यक्ष पद से डा० सूरजभान जी ने कहा—"आवश्यकता इस बात की है कि "विद्यार्थी विद्याध्यन करें तथा अध्यापक दत्तचित्त हो विद्या-दान करे।

रात्रि में श्री वीरेन्द्रजी 'वीर' तथा खेमसिंह जी के भजनोपरान्त आचार्य प्रियव्रत जी ने गुरुकुल शिक्षा-पद्धति की उत्कृष्टता बताते हुए समस्त गुरुकुल प्रेमी जनता से दान की अपील की। तदन्तर गुरुकुल के विद्वान स्नातक पं० क्षितीश जी वेदालंकार ने 'महाभारत' की ऐतिहासिकता पर खोजपूर्ण व्याख्यान दिया। समस्त जनता रात के १२ बजे तक उनके व्याख्यान को दत्तचित्त हो सुनती रही। उन्होंने कहा कि "आर्यसमाज ने वेदों की रक्षा के लिए जो महान् कार्य किया है वैसा ही अब हिन्दुओं के राम और कृष्ण को बचाने के लिए करना पड़ेगा।"

दीक्षान्त-समारोह

१४ अप्रैल—प्रातः विश्व विद्यालय के कुलसचिव डा० गंगाराम जी के नेतृत्व में दीक्षान्त समारोह की कार्यवाही का संचालन हुआ। सबसे प्रथम झण्डा चौक से सन्यासी गण, नव स्नातक, मान्य अतिथि, उपाध्याय, छात्रगण, कर्मचारी अन्यअभ्यागत महोदय एक जुलूस के द्वारा मुख्य पण्डाल में प्रविष्ट हुए। शंख ध्वनि की गई। कुलगीत हुआ। पाण्डाल की शोभा द्विगुणित हो उठी। यज्ञ-वेदी से होम का पवित्र धूम स्वर्ग-सोपान बनाता हुआ, मन्त्रों की सात्विक स्वर लहरी के साथ आकाश की ओर लुप्त हो चला।

अब समय आया, दीक्षान्त की मुख्य कार्यवाही का। कुलसचिव जी ने कुलाधिपति की आज्ञा से दीक्षान्त समारोह के प्रारम्भ की घोषणा की। मान्य कुलपति श्री बलभद्रकुमार जी ने वेद एवं हिन्दी साहित्य के कुछ अधिकारी विद्वानों सर्व श्री पं० भगवद्दत्त जी वेदालंकार, पं. विष्णुमित्र जी, हिन्दी सेवी जैनेन्द्र कुमार जी जैन, पं हरिदत्त जी वेदालंकार आदि को गुरुकुल की सर्वोच्च उपाधि 'विद्या मार्तण्ड से विभूषित किया।



गुरुकुल-पत्रिका के सम्पादक प्रो० रामाश्रय मिश्र डॉ० चेन्नारेड्डी से 'शोध-भारती', 'गुरुकुल-पत्रिका' एवं 'वैदिक-पथ' पर हस्ताक्षर करवाते हुए साथ, प्रसन्न मुद्रा में कुलपति श्री बलभद्रकुमार जी

तदनन्तर कुल के आचार्य डा॰ रामनाथ जी वेदालंकार ने नवस्नातकों को प्राचीन ऋषि-मुनियों व आचार्यों द्वारा दिया जाने वाला गरिमामय उपदेश देते हुए सभी नव स्नातकों को पी-एच॰ डी॰, एम ए एम-एस-सी॰, विद्यालंकार, वेदालंकार तथा बी॰ एस॰ सी की उपाधियां वितीर्ण की।

दीक्षान्त के तीसरे चरण में मान्य कुलपति जी ने गुरुकुल का प्रगति सम्बन्धी परिचय-पत्र समस्त जनता के सामने प्रस्तुत किया तथा गुरुकुल के समस्त विभागों के उत्तम कार्य कर्त्ताओं को विशेष पुरस्कृत किया। (जिनकी नामावली अगले अंक मे दी जाएगी)।

महामान्य राज्यपाल डा० चेन्नारेड्डी के उद्‌गार

दीक्षान्त-समारोह के अन्तिम चरण में नव स्नातकों को आशीर्वाद देते हुए समारोह के मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश के महामहीम राज्यपाल डा॰ चेन्नारेड्डी ने अपने स्पष्ट एवं ओजस्वी तथा विचारोत्तेजक भाषण में गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली का आलोचनात्मक विश्लेषण किया। अपने भाषण में राज्यपाल महोदय ने कहा कि—"गुरूकुल हमारे देश की आदर्श शिक्षा प्रणाली का आधार बना हुआ था। हम विश्वविद्यालय-स्तर पर बच्चों को सुधारने की कोशिश करते हे किन्तु कामयाब नहीं हो पाते। परेशान हे अत. गुरूकुल शिक्षा एक आधार है। बुनियाद को छोड़कर हम कभी मजबूत नहीं हो सकते एमरजेंसी ने कुछ सुधार किया है किन्तु हमें तो आगामी बातों पर विचार करना है। मुझे १७ विश्वविद्यालयों का वाइसचांसलर होने का कठोर अनुभव है। मं यहाँ इसलिए आया कि वर्तमान में फैली व्यापक समस्याओं का समाधान आपके पास मिलेगा। हमें चाहिए कि हम गुरूकुल की जो बातें हे उन्हें लायें। हम अंग्रेजों की तरह सोचते है। अपनी महत्त्वपूर्ण बातों को छोड़ बैठते हैं। आपके यहां जितने विभाग हैं, उन्हें और विस्तार देना होगा। आयुर्वेद जीवन विज्ञान है। आयुर्वेद के विद्वान् अपने अनुभूत योगों को मरते दम तक छिपाते हैं। यही कारण है कि दूसरे लोग हम पर हावी होते जा रहे हे।" उन्होंने कहा--

"हमारी गुरूकुल परम्परा गुरू को महान् पद देती है। अध्यापक पद संकीर्ण है। में गुरू शब्द को महत्त्व देता हूं। गुरू के कुल में गन्दगी कैसी ? हम बच्चो मे लीन हो जाएं। वस्तुतः शिक्षक और पत्रकार वर्तमान और भविष्य के बनाने वाले होते हे। मे तो इस गुरूकुल में आदर्श देखना चाहता हूं। हम यहां के वातावरण को स्वच्छ और आदर्श बनायें। यह गुरूकुल यहाँ बैठी समस्त जनता की धरोहर है। इसकी हमें पूर्ण रूप से रक्षा करनी ही होगी। हर गिरावट ऊपर उठने का संकेत देती है। मुझे प्रसन्नता है कि—यहां शरीक होने का योग मिला। नव स्नातकों का स्वागत करता हूं। मुझे खुशी है कि आपके विश्व विद्यालय ने कुछ विद्वानों को विशिष्ट उपाधियाँ दी। में विश्वविद्यालय को बधाई देता हूं। कुलाधिपति, कुलपति को बधाई देता हूं। और आशा करता हूं। कि गुरूकुल अपने आदर्शों को अपनाता हुआ आगे बढ़ेगा।"

तदन्तर पुराने स्नातकों द्वारा नव स्नातको का स्वागत श्री पं० पूर्णचन्द्र जी विद्यालंकार ने किया। नव स्नातकों की ओर से ब्र० वीरदेव जी ने प्रत्युत्तर दिया।

कुल सचिव डा० गंगाराम जी ने दीक्षान्त-समारोह की समाप्ति की घोषणा की। शान्ति-पाठ के पश्चात् समारोह समाप्त हुआ।

वेद सम्मेलन

मध्याह्न भजनोपरान्त वेद सम्मेलन का कार्य क्रम चला। अध्यक्षता-स्वामी सत्यप्रकाशानन्द जी ने की। उद्घाटन श्री पं० प्रियव्रत जी विद्यामार्तण्ड ने किया। संयोजन प्रो० रामप्रसाद जी वेदालंकार ने किया। वैदिक-समाजवाद विषय पर प्रमुख वक्ताओं–सर्व श्री ब्र० अशोक कुमार जी ब्र० विक्रमकुमार जी, ब्र० हरिदेव जी, डा० सत्यकेतु जी, डा० विष्णुदत्त जी राकेश स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती ने ने विचार प्रस्तुत किए।

आचार्य डा० रामनाथ जी का अभिनन्दन–इसी सम्मेलन में डा० रामनाथ जी का उनके विद्वत्ता-पूर्ण ग्रन्थ 'वेदों की वर्णन शैलियां' का विमोचन डा० सत्यप्रकाशानन्द जी ने किया। गुरुकुलीय विद्वानों ने माल्यार्पण द्वारा आचार्य जी का सम्मान किया। आचार्य जी ने सभी का धन्यवाद करते हुए विशेष रूप से गुरुकुल प्रेस के कार्यकर्त्ताओं तथा डा० हरिप्रकाश जी आदि का अत्यधिक हार्दिक आभार प्रकट किया।

व्यायाम-सम्मेलन

ब्र० देवकेतु द्वारा बल प्रदर्शन:–१४ अप्रैल को व्यायाम सम्मेलन के प्रथम चरण में कुल के उदीयमान छात्र अभिमन्यु और कुलीय भीम की प्रशस्ति से विभूषित ब्र० देवकेतु ने विपरीत दिशा में जाती हुई दो कारों को रोक कर, थाली चीर कर, समस्त जन समुदाय को आश्चर्य चकित कर दिया। कुलपति जी ने अपने स्नेह की बौछार से वातावरण को स्निग्ध कर दिया। समस्त जन समूह ने छात्र के शारीरिक बल प्रदर्शन से प्रभावित होकर दान भी दिया। सम्मेलन की अध्यक्षता वैद्य हरनाम दास जी ने की।

व्यायाम सम्मेलन के दूसरे चरण में रात्रि में विद्यालय के ब्रह्मचारियों ने पी० टी०, डम्बिल्स, लेजिम स्तूप निर्माण, योगासनों आदि का स्फूर्तिदायक सुन्दर प्रदर्शन किया। इसके लिए विद्यालय के व्यायाम शिक्षक श्री रणजीत सिंह जी बधाई के पात्र हैं। ब्रह्मचारियों के इन उत्साह वर्धक खेलों के हर्षोल्लासमय वातावरण के मध्य वार्षिकोत्सव के क्रिया-कलापों का नव-संकल्प व नयी योजनाओं के साथ पटाक्षेप हुआ।

सेवा और त्याग की मूर्ति

स्वर्गीय श्री लक्ष्मणसिंह जी 'यती'

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पुस्तकालय की ऊपरी मंजिल पर एक कक्ष में बैठे दो सधे हुए हाथ फटी-पुरानी पुस्तकों को नया रूप देने में लगे हैं। वृद्ध-कलाकार अपनी साधना में जुटा है। उसकी साधना एक दो वर्ष की नहीं वर्षों की है। ६० वर्ष का वह वृद्ध-युवक उसी लय और तान में अपनी साधना को गति देता रहा। गुरुकुल के प्रति सच्ची सेवा-भावना क्योंकि उसके तन-मन में रच-बस गयो थो। अगर यह कलाकार चाहता तो किसी भी नगर अथवा कस्बे में जिल्दसाजी का कारोबार कर सकता था। प्रसिद्धि प्राप्त कर सकता था। किन्तु स्वामी श्रद्धानन्द जी के अनन्य भक्त, कांगड़ी ग्राम में जन्मे एवं संगीत के प्रेमी श्री लक्ष्मणसिंह जो यती ने कभी भी इस प्रकार के विचारों को मन में स्थान नहीं दिया। प्रतिदिन कांगड़ी गांव से गुरुकुल आने और जाने के लिए गंगा के तीव्रतम प्रवाह और तूफान को भी कुछ नहीं समझा। आपने वर्षों से पुण्य-भूमि में तथा गुरुकुल प्रेस में कार्य किया तदनन्तर श्री राम रखामल जी आपको पुस्तकालय में लाये। कलाकार के जीवन का ध्येय होता है कला की साधना, कर्तव्य के प्रति निष्ठा। यही आपके जीवन के अंग थे। मृदुता और सरलता, निष्कपटता आपके स्वभाव की धरोहर थी। इसी लिए तो आपके असली नाम लक्ष्मणसिंह को न जानकर लोग आपको 'यती' जी के नाम से ही जानते थे। गुरुकुल के नगण्य कार्यकर्ता होते हुए भी आपकी स्मृति अमर है। आपका निधन ६ अप्रैल १९७६ को सायं ७ बजे कांगड़ी में हुआ। स्वामी श्रद्धानन्द जी के तथा पुराने गुरुकुल के न जाने कितने संस्मरण आपके साथ ही लुप्त हो गये। ऐसे पुण्यात्मा के प्रति हम सब कुलवासी शोक श्रद्धाञ्जली अर्पित कर प्रभु से प्रार्थना करते है कि उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करें। परिवार जनों के प्रति हमारा हृदय द्रविभूत है।

गुरुकुल की डायरी १५ अप्रैल ७६ तक

२. सायं ५ बजे कुलपति जी का उपवास समाप्त एवं वेद मन्दिर में यज्ञ।

४. (क) कुलपति निवास पर स्थानीय न्यायाधीश एवं पुलिस अधीक्षक की बैठक।
(ख) अंग्रेजी द्वितीय वर्ष के छात्रों की विदाई।

६. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग भवन में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की उच्च-स्तरीय समिति की बैठक।

६. (क) वेद महाविद्यालय, कला महाविद्यालय एवं विज्ञान महाविद्यालय के प्राध्यापकों की श्री पृथ्वीसिंह आजाद, कुलाधिपति की अध्यक्षता में बैठक।
(ख) विज्ञान महाविद्यालय के वनस्पति शास्त्र के छात्रों की विदाई।
(ग) आर्य समाज में रामनवमी महोत्सव।

१०. सिण्डीकेट की बैठक।

११. (क) प्रधान मंत्री इन्दिरा गाँधी द्वारा आमंत्रित अखिल भारतीय शिक्षा विदों के सम्मेलन में कुलपति श्री बलभद्र कुमार जी सम्मिलित।
(ग) सायंकाल वेद मन्दिर में विद्या सभा की बैठक।
(छ) पंडाल में आयुर्वेद सम्मेलन।

१२ (क) वेद मन्दिर में विद्या सभा की बैठक।
(ख) पंडाल में आर्य सम्मेलन।
(ग) पुस्तकालय में सीनेट की बैठक।
(छ) विद्यालय के प्रार्थना भवन में स्नातक मंडल की बैठक।

१३ (क) वेदारंभ संस्कार पंडाल में।
(ख) डा० सूरजभान की अध्यक्षता में पंडाल में शिक्षा सम्मेलन।

१४. (क) दीक्षांत समारोह।
(ख) पंडाल में वेद सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण।
(ग) व्यायाम सम्मेलन सायंकाल एवं रात्रि।

रामाश्रय मिश्र
जन-सम्पर्क अधिकारी
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार।



उत्तर-प्रदेश के महामहिम राज्यपाल डॉ० चेन्नारेड्डी दीक्षान्त-भाषण करते हुए

--गुरुकुल पत्रिका का मूल्य--

देश	विदेश
१२ रुपये	२० रुपये
१ रुपया २५ पैसे	१ रुपया ७५ पैसे